सुनो कहानी

उच्च प्राथमिक स्तर के लिए
हिंदी की पूरक पुस्तक

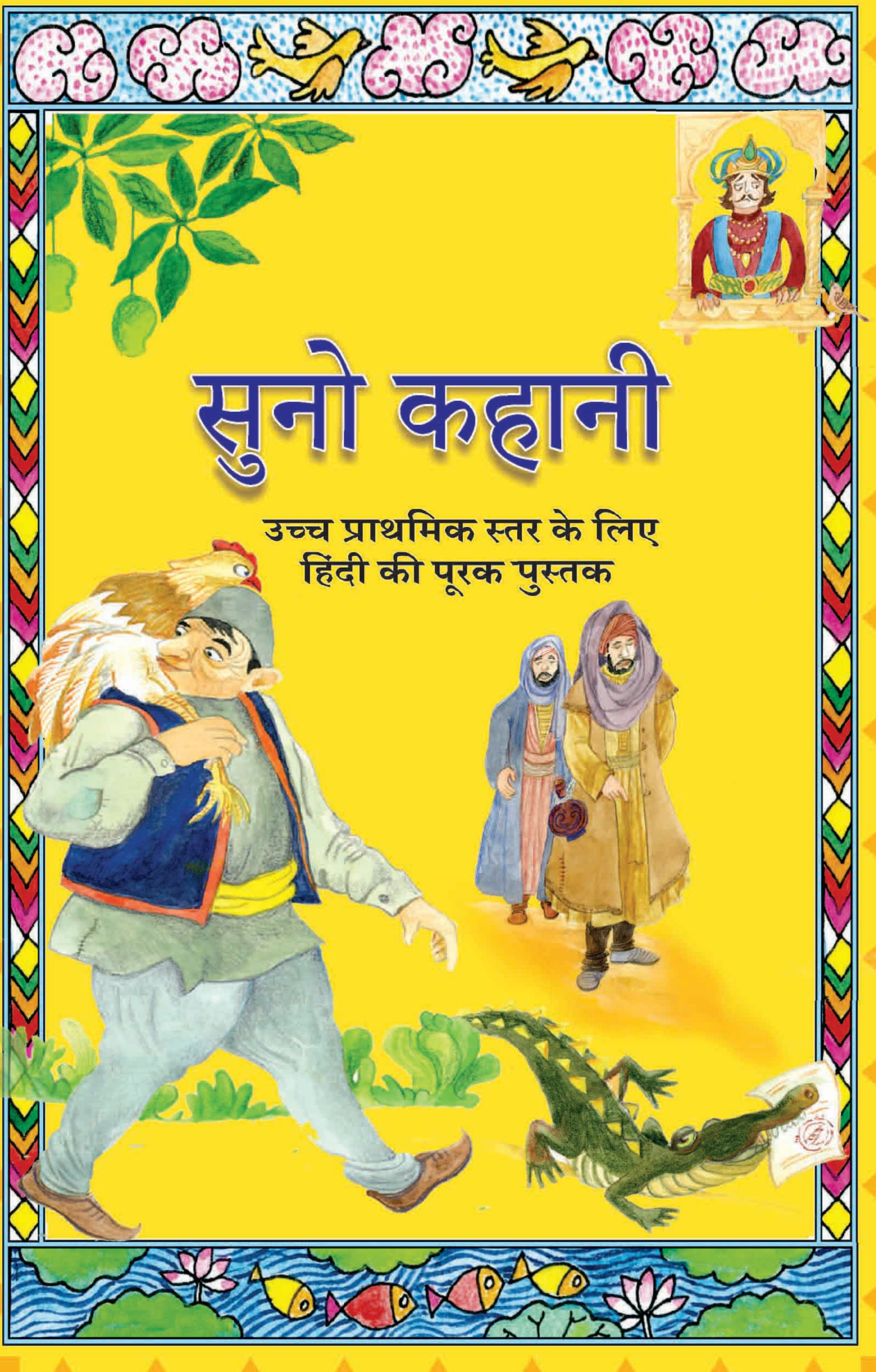

मिल-जुल कर स्कूल में जाएँ, साथ पढ़ें और
साथ में खाएँ। रंग-बिरंगी प्यारी दुनिया,
साथ मिलकर इसे सजाएँ।

सुनो कहानी

उच्च प्राथमिक स्तर के लिए
हिंदी की पूरक पुस्तक

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जून 2015 ज्येष्ठ 1937

पुनर्मुद्रण
जुलाई 2019 श्रावण 1941
जून 2020 ज्येष्ठ 1942

PD 145T RPS

© ***राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2015***

₹ 55.00

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित तथा ????

ISBN 978-93-5007-315-5

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनुप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरूण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	*विपिन दिवान*
संपादक	:	*रेखा अग्रवाल*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*??*

आवरण एवं सज्जा-चित्रांकन
तापशी घोषाल

आमुख

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ पूरक पाठ्यसामग्री/अतिरिक्त पाठ्यसामग्री का प्रकाशन करती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में कहा गया है कि बच्चों की पठन रुचि को विकसित करने के लिए उनके आस-पास पठनसामग्री का विपुल भंडार होना चाहिए। उनके सामने चयन के ऐसे विकल्प मौजूद हों, जो उन्हें स्थायी पाठक बनने में मदद करें। इसे ध्यान में रखकर उच्च प्राथमिक स्तर के हिंदी विद्यार्थियों के लिए **सुनो कहानी** को तैयार किया गया है। इस पुस्तक में देश-विदेश की श्रेष्ठ लोक कथाओं का संग्रह किया गया है। आशा है यह पुस्तक विद्यार्थियों में पढ़ने की संस्कृति विकसित करेगी तथा अध्यापकों सहित अन्य पाठकों को आकृष्ट करेगी।

पुस्तक के सामग्री-चयन और समीक्षा के लिए आयोजित कार्यशालाओं में उपस्थित होकर जिन विषय विशेषज्ञों तथा अनुभवी अध्यापकों ने अपने बहुमूल्य सुझावों द्वारा पुस्तक को उपयोगी बनाने में सहयोग किया है, परिषद् उनके प्रति आभार व्यक्त करती है। हम श्री अशोक वाजपेयी, सुप्रसिद्ध लेखक-कवि के भी आभारी हैं जिन्होंने पुस्तक की समग्र रूप से समीक्षा कर पुस्तक को बेहतर बनाने में सहायता की है। यह पुस्तक परिषद् के भाषा शिक्षा विभाग के हिंदी संकाय सदस्यों द्वारा किया गया एक सराहनीय प्रयास है।

निश्चय ही, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों का विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। अत: पुस्तक को और उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, अध्यापकों और विशेषज्ञों के सुझावों का स्वागत है।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली

शिक्षित बालिका
शिक्षित समाज
सशक्त बालिका
सशक्त समाज
स्वस्थ बालिका
स्वस्थ समाज

सुनो कहानी

बच्चों, अक्सर घर में बड़ों से जिन कहानियों को सुनने की ज़िद हम करते हैं, उनके मूल में कहीं न कहीं लोककथा ही होती है। किस्से-कहानियों की दुनिया में बिखरी कथाएँ लोककथा का रूप ले लेती हैं। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक की यात्रा करती लोककथाएँ जब देश और काल के बंधन को भी नहीं मानती तो सिर्फ़ एक कहानी सुनाने वाले से दूसरे कहानी सुनाने वाले तक की अनंत यात्रा में रहती हैं। बस थोड़े हेर-फेर के साथ सारी दुनिया के बच्चों को रोमांचित करती हैं।

लोक कथाओं का परिवेश जितना असाधारण होता है कल्पना की उड़ान उतनी ही ऊँची और सशक्त होती है। तुम जानते ही हो कि लोक कथाएँ वाचिक परंपरा की धरोहर के रूप में सदियों से प्रत्येक सभ्यता और समाज में विद्यमान रही हैं। ये सहज स्वाभाविक लोक कथाएँ लोक संस्कृति का अंग हैं और इनका रचना संसार बहुत विस्तृत है। इसमें समाज के दु:ख-सुख, रिश्ते-नाते, हार-जीत समाए रहते हैं। बच्चे कहानी के नायकों के दु:ख में दुखी होते हैं, खुशी में खुश होते हैं। उन्हें बुराई से नफ़रत होती है और भलाई का वे बड़े उत्साह से स्वागत करते हैं। लोक कथाएँ बच्चों के लिए अजीबो-गरीब, रोमांचक घटनाओं का विवरण मात्र नहीं होतीं, उनके लिए तो यह एक पूरा संसार होता है जिसमें वे रहते हैं, संघर्ष करते हैं, बुराई का अच्छाई से मुकाबला करते हैं।

ये लोक कथाएँ किसी काल विशेष या विशेष परिस्थितियों में निर्मित नहीं हुईं ये तो लोक भाषाओं, बोलियों में सदियों से कही-सुनी जाती रही हैं। इनके पात्रों में, परिवेश में मुख्य रूप से प्रकृति, पशु-पक्षी, धरती, पहाड़, प्रकृति के रहस्य, परियों, भूतों के रूप में, राजा-रानी सरीखे काल्पनिक पात्र होते हैं पर मूल में होते हैं मानव जीवन के संघर्ष और समाज का प्रतिबिंब।

मनुष्य की कहने-सुनने की चाहत ने लोककथाओं को विकसित किया है। लोककथा की दुनिया में आपको सब कुछ मिलेगा—मान्यताएँ, रीति-रिवाज़, लोक-व्यवहार, मेले-त्यौहार, मनोरंजन, अनुभव का बाँटना, शिक्षा, भय, कल्पना, इच्छा-पूर्ति, राक्षस-भूत, जादू, राजकुमार-राजकुमारी आदि-आदि। सब कुछ जो आप सोच सकते हैं; या नहीं। कुल मिलाकर फंतासी और सच्चाई के बीच लोककथा झूला झुलाती है। लोककथा की दुनिया बड़ी रोमांचक है। जहाँ हमारी मुलाकात–बोलते जानवर, बोलते पेड़, चलते पहाड़, रूप बदलते इंसान, इंसान को चकमा देते पक्षी, दानव से लड़ता मानव, सूरज-चाँद-सितारों का इंसान बन बोलना आदि से होती है।

लोककथा का विषय साधारण होते हुए भी गंभीर और मज़बूत होता है; और अंत अधिकतर सुख से भरा। लोककथा को पढ़ते हुए आपका परिचय लोक परिवेश से जुड़ी कहावतों और भाषा से भी होगा जिसमें मेलोडी, ड्रामा, रहस्य, रोमांच, उत्तेजना, गुदगुदी भरपूर मात्रा में मिलेगी।

तुमने महसूस किया होगा कि लोक-कथाओं की भाषा में एक अनोखी लय होती है जो सीधे पाठक के मन को छू जाती है, साथ ही यह लय होती है– शब्दों की, छंदों की, बिम्बों की। यह लय होती है– पहाड़ी झरने-सी सहज, स्वाभाविक और स्वच्छंद।

देश-विदेश की लोक कथाओं की धरोहर से चुनी कुछ स्तरीय और चुनिंदा लोक कथाओं को तुम तक पहुँचाने और सुनने-सुनाने का प्रयास है यह संग्रह— ***सुनो कहानी***। वास्तव में यह तुम्हारी ही अमानत है जो एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती चली आ रही है...।

उम्मीद है यह सिलसिला ज़ारी रहेगा...

पुस्तक निर्माण समूह

सदस्य-समन्वयक

चंद्रा सदायत—*प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

नरेश कोहली—*सहायक प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

प्रमोद कुमार दुबे—*सहायक प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

संध्या सिंह—*प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अपूर्वानंद—*प्रोफ़ेसर*, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

अशोक वाजपेयी—*हिंदी लेखक*, सी-18, अनुपम अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एनक्लेव, दिल्ली

अक्षय कुमार—*हिंदी शिक्षक*, सर्वोदय बाल विद्यालय, फ़तेहपुर बेरी, दिल्ली

उषा शर्मा—*एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्राथमिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

प्रेमपाल शर्मा—*हिंदी लेखक*, 96, कला विहार, मयूर विहार, फ़ेज़-I, दिल्ली

माधवी कुमार—*पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

राकेश कुमार—*उप-प्राचार्य*, बी.आर.एस.बी.वी., भोलानाथ नगर, दिल्ली

रामजन्म शर्मा—*पूर्व प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

लता पाण्डेय—*प्रोफ़ेसर*, प्राथमिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

विमल थोराट—*प्रोफ़ेसर*, इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, (इग्नू) नयी दिल्ली

श्यामसिंह सुशील—*हिंदी लेखक*, ए-13, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एनक्लेव, दिल्ली

संजय कुमार सुमन—*एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

संतोष कुमार पाण्डेय—*हिंदी शिक्षक*, केंद्रीय विद्यालय, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

विषय-क्रम

	आमुख		*iii*
	सुनो कहानी		*v*
1.	समय-समय की हवा	(राजस्थान)	**1**
2.	खूँटे में दाल है	(उत्तर प्रदेश)	**10**
3.	कौन बनेगा निंगथउ (राजा)	(मणिपुर)	**19**
4.	भूख की रजिस्ट्री	(दक्षिण अफ्रीका)	**25**
5.	तीन अक्लमंद भाई	(उज़बेकिस्तान)	**31**
6.	तोता और राजा	(झारखंड)	**39**
7.	सबसे बड़ा कौन ?	(रूस)	**43**
8.	सबसे भली चुप	(गुजरात)	**49**
9.	मरता क्या न करता	(केरल)	**51**
10.	रोटी और मुर्गी	(नेपाल)	**56**
11.	लोमड़ी और ढेला	(छत्तीसगढ़)	**63**

आभार

परिषद् रचनाकारों, उनके परिजनों, संस्थानों/प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने उनकी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

पुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् डी.टी.पी. ऑपरेटर नरगिस इस्लाम, कंप्यूटर टाइपिस्ट चंद्रकांत और कॉपी एडीटर श्यामसिंह सुशील की आभारी है।

समय-समय की हवा

समय की बात–समय के हाथ–कि किसी समय की गोद में एक सुखी-संतोषी गाँव बसा हुआ था। अपने-अपने घर और अपने-अपने दरवाज़े होते हुए भी गाँव की चौपाल एक थी। सभी घरों के बुज़ुर्ग और नौजवान ब्यालू से निबटते ही अलाव के चारों तरफ़ बैठकर घरेलू बातें करते थे। पुरानी बातों के झपाटे उड़ते थे। हँसने की बात सुनकर हँसते थे, दुख की बात सुनकर आहें भरते थे। किसी का भी मुँह झूठ और छल-कपट की वाणी सीखा हुआ नहीं था। सच्ची बात कहते थे और सच्ची बात सुनते थे। घर-घर चूल्हे में मंद-मंद आँच तो जलती थी, मगर किसी भी कोने में आग लगी हुई नहीं थी। बूते की कामना और बूते का काम–नीचे धरती और ऊपर राम।

मुट्ठी में समाय इतनी ही ज़रूरतें थीं। पेट के लिए रोटी–पीने के लिए पानी। पहनने को कपड़े–रहने को मकान। सूर्योदय से पहले ही घर-घर में रोशनी फ़ैल जाती।

उस गाँव के ज़मींदार ने अपनी ज़मीन किसान को खेती के लिए सौंप रखी थी। किसान ने लगान न देने की खातिर बहुत मिन्नतें कीं, लेकिन ज़मींदार किसी भी कीमत पर राज़ी नहीं हुआ। किसान ने ज़्यादा मगज़मारी की तो ज़मींदार बोला कि उसके पास काफ़ी ज़मीन है। मरने पर साथ तो ले जाने से रहा! जोतो-बोओ-कमाओ और खाओ। किसान ने एक दिन खटपट निबटाने के लिए चौपाल में बात चलाई तो बस्ती के सब लोगों ने ज़मींदार की बात ही रखी।

संयोग का खेल कि एक दिन ज़मींदारवाली ज़मीन से झाड़ियों की जड़ें निकालते समय किसान को मोहरों से भरा एक कलश नज़र आया। चारों ओर से उकेरने पर एक-एक करके सात कलश हाथ लगे। काम छोड़कर किसान ने तुरंत बैल जोते। गाड़ी पर सातों कलश रखे और तपती दोपहर में ज़मींदार के घर की तरफ़ चल पड़ा।

ज़मींदार ने दूर से ही गाड़ी को आते देखा तो मन-ही-मन किसान पर नाराज़ हुआ। साफ़ इनकार करने के बावजूद लगान की गाड़ी जोतकर लाया तो लाने दो। अच्छी तरह खबर लूँगा। बस्ती की बात को टालने की हिम्मत हुई तो हुई कैसे! लेकिन गाड़ी पर कलश देखकर उसका गुस्सा कुछ ठंडा पड़ गया। मुसकराकर पूछा, "यह फिर क्या नयी मुसीबत ले आया?"

किसान ने भी उसी तरह मुसकराते हुए जवाब दिया, "लगान न लेने की हेकड़ी तो निभ गई, लेकिन अब यह मुसीबत तो कबूल करनी ही पड़ेगी।"

ढक्कन उघाड़ने पर ज़मींदार ने चमचमाती मोहरें देखीं तो आश्चर्य से पूछा, "बाजरे की जगह खेत में मोहरें पैदा हुई हैं क्या?"

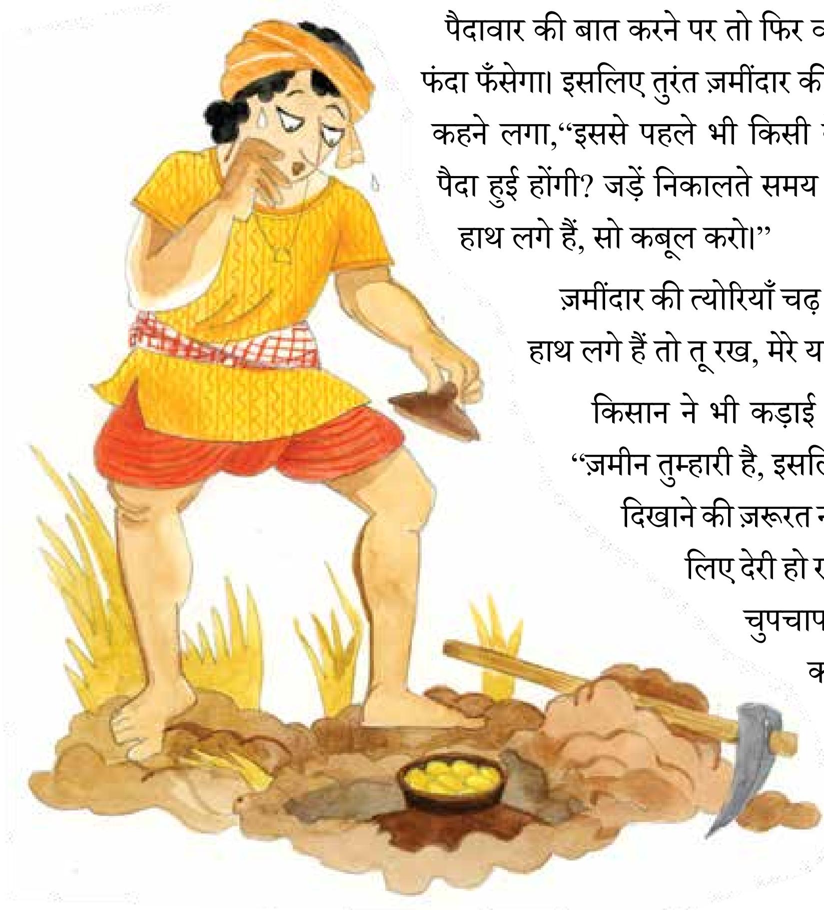

पैदावार की बात करने पर तो फिर वही लगान वाला फंदा फँसेगा। इसलिए तुरंत ज़मींदार की बात काटते हुए कहने लगा,"इससे पहले भी किसी के खेत में मोहरें पैदा हुई होंगी? जड़ें निकालते समय यह सात कलश हाथ लगे हैं, सो कबूल करो।"

ज़मींदार की त्योरियाँ चढ़ गईं। बोला, "तेरे हाथ लगे हैं तो तू रख, मेरे यहाँ क्यूँ लाया?"

किसान ने भी कड़ाई से जवाब दिया, "ज़मीन तुम्हारी है, इसलिए लाया। आँखें दिखाने की ज़रूरत नहीं। मुझे काम के लिए देरी हो रही है। शराफ़त से चुपचाप कलश कबूल करके मेरा फंदा काटो। लगान वाली बात निभ गई सो ही बहुत है।"

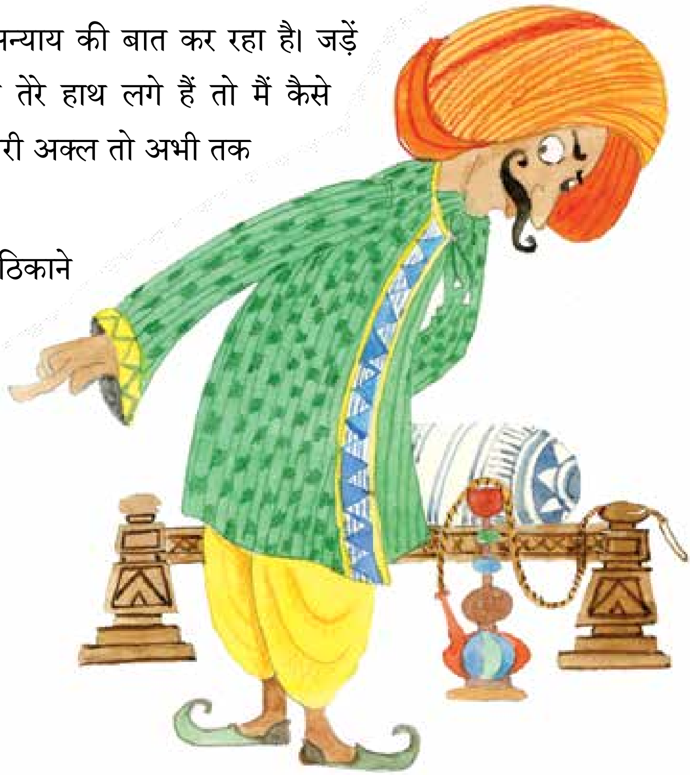

ज़मींदार आत्मीयता के स्वर में मीठा उलाहना देते कहने लगा, "देख, तू फिर अन्याय की बात कर रहा है। जड़ें निकालते समय कलश तेरे हाथ लगे हैं तो मैं कैसे कबूल कर सकता हूँ! मेरी अक्ल तो अभी तक ठिकाने है।"

"अगर अक्ल ठिकाने होती तो यूँ तुरंत ना नहीं करते। ऐसी अबूझ बात तो कोई बच्चा भी नहीं करता। जब खेत तुम्हारे हैं तो कलश भी तुम्हारे हैं। इसमें ऐसी कलह की बात ही क्या है।"

ज़मींदार व्यंग्य करते हुए बोला, "सारे इलाके की अक्ल का तू अकेला ही इज़ारेदार दिखता है। ऐसी बेवकूफ़ी की बात सुनकर बस्ती के लोग हँसेंगे, फिर भी पंचायत बैठाने के लिए मेरी ना नहीं है।"

किसान ने कुछ तड़पते हुए ज़ोर से कहा, "तुम्हारी ना क्यों होगी, मेरी ना है। गरीब के साथ कोई भी न्याय नहीं करता। पंचायती के लायक बात हो तो पंचायती भी कराएँ।"

ज़मींदार तैश में आकर कहने लगा, "तेरे कहने से क्या होता है। कैसे पंचायती की बात नहीं है, उस दिन मेरे खेत में तूने करचा गड़ा था तब मेरा पाँव तो बेकार नहीं हुआ। बता, चौमासे में मेरे खेत पर काम करते समय तुझ पर बिजली गिरे तो तू मरेगा या मैं?"

"मुझ पर बिजली गिरेगी तो मैं ही मरूँगा!"

"खेत मेरा है तब मुझे मरना चाहिए! बता, मेरे खेत में काम करते हुए अगर तुझे साँप काट खाए तो उसका ज़हर मुझे चढ़ेगा या तुझे? बोल?"

"अब इन उलटी-सीधी पहेलियों में मत उलझाओ। तुम पर अच्छा-खासा विश्वास करके मैं यहाँ आया था। मैं जानता हूँ कि पंचायती होने पर मेरे साथ इंसाफ़ नहीं होगा।"

"तब पंचायती क्यों करवाता है? चुपचाप ये कलश अपने घर ले जा। मैं कहीं भी चर्चा नहीं करूँगा।"

"खूब चर्चा करो, मैं किसी से डरता थोड़े ही हूँ। उधार लिया हुआ मुँह हो तब भी ऐसी बात करते थोड़ी-बहुत शर्म आती है। तुम्हारा माल मैं कैसे घर ले जाऊँ? ये कलश जानें और तुम जानो। मैं तो यहीं गाड़ी छोड़कर खेत जा रहा हूँ। इतनी देर में तो मैं आधी जड़ें निकाल लेता। खामखाह बहस करना मुझे नहीं पोसाता।"

और यह आखिरी बात कहकर वह वहाँ से चल पड़ा। ज़मींदार ने उसे पुकारकर कहा, "देख, बेकार ज़िद करके मत जा। पछताएगा।"

"कोई बात नहीं।"

ज़मींदार का गुस्सा समाया नहीं। पर किसान नहीं माना, तब वह कर ही क्या सकता था! घड़ी-डेढ़ घड़ी रात ढलने पर वहीं अलाव के पास पंचायत जमी। किसान की बात सुनकर पंचों ने भिड़ते ही उससे सवाल किया, "ये कलश अपने आप उछलकर बाहर आए या तूने खोदकर निकाले?"

"निकाले तो मैंने खोदकर ही। कलश अपने आप उछलकर बाहर कब आते हैं।"

पंच मुसकराकर कहने लगे, "तब तो यह न्याय तेरे अपने मुँह से ही हो गया कि तेरी मेहनत का फल तुझे ही मिलना चाहिए।"

लेकिन गँवार किसान तब भी नहीं माना। पंचों के सामने वही हठ करते कहने लगा, "लेकिन ज़मीन तो मेरी नहीं है। दूसरे की ज़मीन में गड़ा धन लेने के लिए मेरा मन नहीं मानता।"

पंचों ने कहा, "तेरे मन को मनाना हमारे वश में नहीं है। इंसाफ़ करना हमारे ज़िम्मे था, जो हमने निबटा दिया। धरती, पानी और हवा पर किसी का भी हक नहीं होता। अगर तू ऐसा ही हरिश्चंद्र है तब दूसरे की ज़मीन पर बहती हवा में तुझे साँस भी नहीं लेना चाहिए।"

"आप फरमाएँ तो नहीं लूँ?"

पंचों ने कहा, "लेकिन हम ऐसी उलटी बात क्यों फरमाएँ। हमारा कहना मान, जब तक गाड़नेवाले का पता नहीं चले तब तक यह अमानत तू ही सँभाल।"

"यह अमानत मेरे किस काम की? यह तो नींद बेचकर जागरण मोल लेना है। भगवान जाने, किसने क्या आस करके ये मोहरें गाड़ी होंगी! या तो दूध का दूध और पानी का पानी करो, वरना मुझे ये कलश राज्य के खज़ाने में जमा कराने पड़ेंगे।"

पंचों ने कहा, "हमने तो अपनी समझ के अनुसार जो इंसाफ़ करना था सो कर दिया। तू न माने तो तेरी मरज़ी।"

तब वह किसान चटकते हुए बोला, "जब इंसाफ़ का रास्ता ही नहीं जानते तो इंसाफ़ करने के लिए मुँह धोते ही क्यों हो?"

उसके बाद वह ज़िद्दी किसान सीधा राजदबार पहुँचा। ध्यान से सारी बात सुनने के बाद राजा ने कहा, "जान-माल की रक्षा के लिए मैं राजा बना, तब तेरा माल छीनने का मुझे अधिकार ही क्या है। तूने बेकार ही जूते घिसे। गाँव के पंचों ने तेरे साथ बेइंसाफ़ी नहीं की। तू खुशी-खुशी ये कलश अपने घर ले जा। तेरी मेहनत और तेरा ही फ़ल!"

राजा के मुँह से यह न्याय सुनकर किसान का मुँह फीका पड़ गया। वह कुछ दूसरी आस लेकर यहाँ आया था। धीमें सुर में कहने लगा, "आपका यह आदेश तो

मैं हरगिज़ नहीं मानूँगा। और इन मोहरों का मैं क्या करूँ? बेकार जगह घेरेंगी। आप नाराज़ न हों तो मैं पंचों के सामने उसी जगह ये सातों कलश वापस गाड़ दूँ?"

उस वक्त की गोद में जैसी प्रजा थी, वैसा ही उसका राजा था। होंठों पर मुसक-राहट छितराते कहने लगा, "जैसी तेरी मंशा।"

आखिर उस किसान की जो मंशा थी, वही हुआ। तीसरे दिन सूर्योदय के वक्त बस्ती के लोग पास खड़े देखते रहे और उसने अपने हाथों उसी जगह कलश वापस गहरे गाड़ दिए।

उसके बाद वक्त की ढलान पर, वक्त की हवा, निरंतर बिना साँस लिए, बहती ही गई–बहती ही गई। हवा के उन थपेड़ों के आगे न तो वह किसान रहा, न वे बस्ती के लोग और न वह राजा। वक्त की गोद में नयी पीढ़ी अवतरित हुई–नया राजा और नये ही पंच–नयी पीढ़ी, नया ही खून।

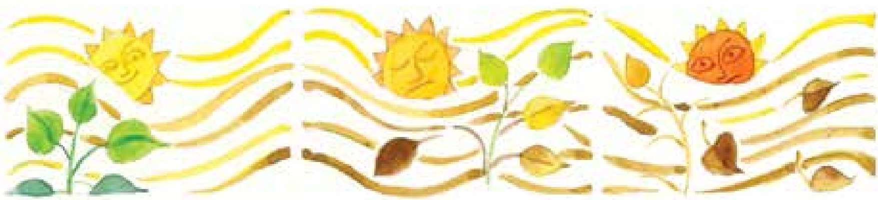

नयी हवा में अभी तक वह पुरानी बात घुली हुई थी। एक दिन ज़मींदार का नौजवान बेटा उस किसान के बेटे के पास जाकर कहने लगा, "मेरे पुरखे तो बिलकुल नासमझ थे। लेकिन मैं वैसा नासमझ नहीं हूँ।"

वह आगे कुछ और कहना चाहता था लेकिन लड़का बीच में बोला तो उसे रुकना पड़ा। किसान का लड़का मुसकराने की चेष्टा करते कहने लगा, "आप क्यों नासमझ होने लगे? लेकिन मैं तो अभी तक अपने पुरखों की तरह वैसा ही नासमझ हूँ।"

"हाँ, तू नासमझ है, सो मैं जानता हूँ। तभी मेरे खेत में गड़े हुए कलश तू मुझसे बगैर पूछे, छुपाकर रात को घर ले आया।"

किसान के बेटे ने मन-ही-मन सोचा कि हज़रत खेत की ज़मीन टटोलकर आए दिखते हैं!

वहाँ कलश हों तो मिलें! सुमत सूझी जो सात दिन पहले सारे कलश घर ले आया। नहीं तो आज एक मोहर भी हाथ न लगती। अब दबने से बात बिगड़ जाएगी। निस्संकोच बोला, "क्यों, इसमें पूछने की क्या बात है? खेत कोई मुफ़्त में नहीं जोतता। तीसरे हिस्से का लगान चुकाता हूँ। जड़ें निकालते समय अगर साँप काट खाता तो मेरे बच्चे यतीम होते। आपका कुछ भी नहीं बिगड़ता। अपनी मेहनत से खोदा धन अपने घर लाया। इसमें छुपाने की क्या बात है?"

दोनों में परस्पर बहुत दाँताकसी हुई, लेकिन ज़मींदार के लड़के की कुछ दाल नहीं गली। आखिर धमकी देते बोला, "मैं भी देखता हूँ, मेरे खेत में गड़ा धन तुझे कैसे पचता है?"

"पचना-वचना क्या ठाकुर, वह तो पच गया। दूसरे के माल की आस करने से काम नहीं चलता। आखिर तो पसीने की कमाई से ही पार पड़ेगा।"

लाल-पीली आँखें निकालते वह बस्ती के लोगों के सामने चिल्लाया। पंचों ने सोचा, ऐसी शानदार पंचायती तो मुश्किल से ही हाथ लगती है। काफ़ी दिनों तक आँतें और अँगुलियाँ चिकनी रहेंगी। ज़मींदार के लड़के ने पंचों को घर बुलाकर काफ़ी खातिर-तवज्जह की। किसान के बेटे को पता चला तो उसने भी पंचों को अपने घर बुलाया और उनकी मुट्ठियाँ गरम कीं। पंचों की राय फिर बदल गई।

रात को नित पंचायत जुड़ती। आधी रात ढलने तक खूब थूक उछलता। गाँव में दो दल बन गए, आधे पंच खेत के मालिक के साथ और आधे किसान के साथ। सूत उलझा तो उलझा, लेकिन पंचों की मौज में किसी तरह की कोई कमी नहीं थी।

काफ़ी दिनों तक सिर खपाने के बाद पंचों ने लगान के हिस्से माफ़िक मोहरें बाँटने का फ़ैसला दिया। लेकिन किसान का बेटा नहीं माना। उसके पास सूरज के टुकड़ों की ताकत थी। उसने फिर पंचों को अपने घर बुलाकर शानदार आवभगत की। यकायक ज़मींदार के हिमायती फ़िसल गए। बेहाड़ की ज़बान इधर से उधर मुड़ गई। बेचारे ज़मींदार ने खर्च-खाते के बावजूद सब्र किया।

वक्त की हवा फिर अपनी मस्ती में बही-खूब बही।

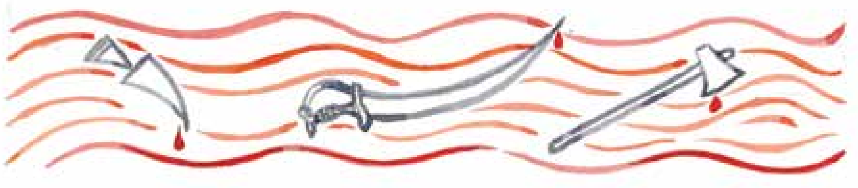

गाछ-बिरछों के अनेक पात झड़े और अनेक कोपलें फूटीं। नये अंकुर उगे। अनगिनत नदियों का पानी समुद्र में इकट्ठा हुआ। असंख्य सूरज उदित हुए, चोटी पर चढ़े और अस्त हो गए। फिर एक पीढ़ी ठिकाने लगी। नयी पीढ़ी का नया खून नसों के भीतर उलटी छाती चढ़ने लगा। नयी हवा में अभी तक पुरानी बातें घुली हुईं थीं।

ज़मींदार का नौजवान दिलेर पोता नंगी तलवार लेकर किसान के घर पहुँचा। किसान का पोता भी ललकार सुनकर हाथ में फरसा लिए बाहर आया। कहा-सुनी से जब निबटारा नहीं हुआ तो ज़मींदार के पोते के एड़ी से चोटी तक आग लग गई। पंजे के बल उचककर किसान के गले पर भरपूर वार किया।

तलवार सपाक-से गले के पार हो गई। कटा मुंड पैरों में आ गिरा।

भाभी की चीत्कार सुनकर मझला और छोटा भाई बाड़े से दौड़े आए। दोनों के हाथों में दो लंबे तड़े थे। नौजवान ज़मींदार के गले में मझले भाई ने तड़ा फँसाकर ज़ोर से झटका दिया तो उसका गला आधा कटकर लटक गया। खून की फुहार से सारा बदन सराबोर होने लगा।

उस गाँव की धरती पर पहली दफ़ा पसीने की जगह खून की आकृति चित्रित हुई। गाँव के पंच शामिल होकर राजा की शरण में पहुँचे। गड़े धन की बात सुनते ही राजा को गुस्सा आ गया।

पंचों ने इतने दिनों तक भेद छिपाकर क्यों रखा? गड़ा धन तो राजा का ही होता है। उसके आदेश से पंचों को इक्कीस-इक्कीस जूतों की सजा मिली। तत्पश्चात् राज्य के घुड़सवारों ने घोड़े दौड़ाए, सो किसान के पचावे में छुपाए हुए कलश तुरंत सरकारी खज़ाने के हवाले किए।

समय-समय की हवा और समय-समय की बयार।

उस सुखी और संतोषी गाँव में जमी हुई चौपाल उठ गई। घर-घर आग की लपटें लपलपाने लगीं। भगवान जाने, वह आग बुझेगी कि नहीं। समय की बात–समय के हाथ।

– **विजयदान देथा**

खूँटे में दाल है

उस चिड़िया का नाम धीरा था। वह एक बहुत खुशदिल और मेहनती गौरैया थी। सवेरे उठकर ही ताल किनारे वाले बड़े मैदान में उतर जाती और शाम तक अपने और अपने बच्चों के लिए दाना-टुनका चुगती रहती। वह हमेशा खुशी से चहकती रहती।

जब वह थक जाती तो ताल के जल में दो-चार बार डुबकी लगाती और फरफर अपने पखों को फरफराने के बाद फ़ुर्र से उड़कर अपने काम में जुट जाती।

पर एक दिन धीरा चिड़िया परेशानी में फँस गई। वह काफी खोजने-तलाशने के बाद चने की दाल का एक दाना बीन कर ले आई थी। दाल का दाना उसे बहुत पसंद था। वह मैदान में गड़े एक खूँटे पर बैठ गई। दाने को प्रेम से खाने के लिए उसने खूँटे पर रख दिया।

खूँटा बहुत ही दुष्ट और ईर्ष्यालु था। उससे चिड़िया का सुख देखा नहीं गया। उसने अपनी दरार चौड़ी कर दी और दाल का दाना अंदर हड़प लिया। धीरा चिड़िया बहुत परेशान हुई। उसने दाल निकालने की बड़ी कोशिश की पर दाल का दाना वह नहीं निकाल पाई। वह इधर फुदकी, उधर फुदकी, पर उसकी कोशिश बेकार गई।

अंत में खूँटे से उसने कहा,
खूँटा, खूँटा, दाल निकालो,
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ,
क्या ले परदेश जाऊँ?

खूँटे ने उसे झिड़क दिया, 'जाओ, जाओ, दाल-वाल नहीं मिलेगी।'

धीरा चिड़िया के नन्हे दिल को इससे बहुत चोट पहुँची। वह खुद अपनी मेहनत से दाल बीनकर ले आई थी। वह उसकी पसीने की कमाई है। वह तो अपना हक माँग रही है। नहीं, वह अपना हक नहीं छोड़ेगी।

वह उड़कर बढ़ई के पास पहुँची। बढ़ई से उसने प्रार्थना की–

बढ़ई, बढ़ई, खूँटा चीरो
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ,
क्या ले परदेश जाऊँ?

बढ़ई ने उसे घूर कर देखा। ऐसे छोटे लोगों के लिए वह खूँटा चीरे?

उसने कहा, 'जाओ, जाओ, अपना रास्ता नापो। हम खूँटा-वूँटा नहीं चीरते।'

इसके बाद धीरा गौरैया राजा के पास गई। उसने राजा से निवेदन किया–

राजा, राजा, बढ़ई दंडो,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ,
क्या ले परदेश जाऊँ?

राजा ने उसको डाँट कर भगा दिया। इस नाचीज़ चिड़िया के लिए वह बढ़ई को क्यों दंड दे?

धीरा इसके बाद रानी के पास गई। उसने रानी से कहा–

रानी, रानी, राजा छोड़ो,
राजा न बढ़ई दंडे,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ,
क्या ले परदेश जाऊँ?

रानी ने कहा, 'तुम्हारे लिए मैं राजा को छोड़ दूँ? जाओ-जाओ...।'

चिड़िया ने इसके बाद साँप के पास जाकर कहा–

साँप, साँप, रानी डसो,
रानी न राजा छोड़े,
राजा न बढ़ई दंडे,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ,
क्या ले परदेश जाऊँ?

साँप इसके लिए तैयार न हुआ तो वह लाठी के पास गई और उसने कहा–

लाठी, लाठी, साँप मारो,
साँप न रानी डसे,
रानी न राजा छोड़े,
राजा न बढ़ई दंडे,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,

क्या खाऊँ, क्या पीऊँ
क्या ले परदेश जाऊँ?

लाठी ने भी उसका काम नहीं किया। पर उसने हिम्मत नहीं हारी। वह उड़कर आग के पास पहुँची। आग से वह बोली–

आग, आग, लाठी जारो,
लाठी न साँप मारे,
साँप न रानी डसे,
रानी न राजा छोड़े,
राजा न बढ़ई दंडे,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ,
क्या ले परदेश जाऊँ?

आग भी धीरा चिड़िया के लिए लाठी जलाने को तैयार नहीं हुई।

तब चिड़िया समुद्र के पास जाकर बोली :

समुद्र, समुद्र, आग बुझाओ,
आग न लाठी जारे,
लाठी न साँप मारे,
साँप न रानी डसे,
रानी न राजा छोड़े,
राजा न बढ़ई दंडे,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,

क्या खाऊँ, क्या पीऊँ
क्या ले परदेश जाऊँ?
समुद्र ने भी उसका कहना नहीं माना।
तब उसने हाथी के पास जाकर कहा–
हाथी, हाथी, समुद्र सोखो,
समुद्र न आग बुझाए,
आग न लाठी जारे,
लाठी न साँप मारे,
साँप न रानी डसे,
रानी न राजा छोड़े,
राजा न बढ़ई दंडे,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ,
क्या ले परदेश जाऊँ?
हाथी ने भी समुद्र का पानी सोखने से इंकार कर दिया।

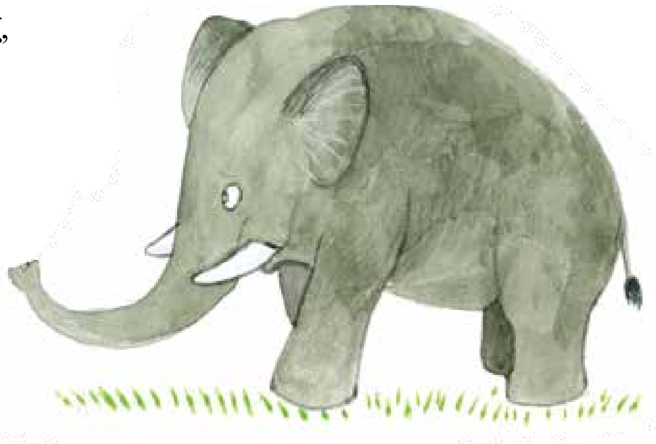

तब चिड़िया जाल के पास गई और बोली–

जाल, जाल, हाथी छानो,
हाथी न समुद्र सोखे,
समुद्र न आग बुझाए,
आग न लाठी जारे,
लाठी न साँप मारे,
साँप न रानी डसे,
रानी न राजा छोड़े,

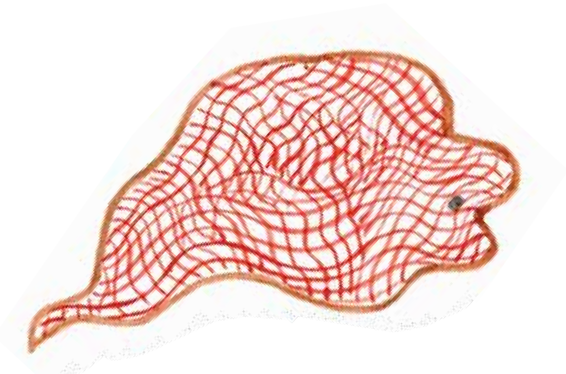

राजा न बढ़ई दंडे,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ,
क्या ले परदेश जाऊँ?

जाल भी हाथी के पैर छानने के लिए उसके साथ नहीं गया।

चिड़िया बेहद थक गई थी। पर वह अपने हक की लड़ाई छोड़ने वाली नहीं थी। वह चूहे के पास गई। चूहे से उसने कहा–

चूहा, चूहा, जाल कुतरो,
जाल न हाथी छाने,
हाथी न समुद्र सोखे,
समुद्र न आग बुझाए,
आग न लाठी जारे,
लाठी न साँप मारे,
साँप न रानी डसे,
रानी न राजा छोड़े,
राजा न बढ़ई दंडे,
बढ़ई न खूँटा चीरे,
खूँटे में दाल है,
क्या खाऊँ, क्या पीऊँ
क्या ले परदेश जाऊँ?

चूहा उसकी बात सुनकर अचंभे में आ गया। कितने शक्तिशाली लोगों के पास यह चिड़िया गई, पर किसी ने उसकी फ़रियाद नहीं सुनी। उसकी मदद नहीं की।

वह खुद एक छोटा व साधारण जीव था–उसे चिड़िया से सहानुभूति हुई।

साधारण लोग ही साधारण लोगों की मदद कर सकते हैं, शक्तिशाली लोग तो अपने घमंड में चूर रहते हैं।

चूहे ने कहा, 'चलो मैं तुम्हारा साथ दूँगा।'

चूहा चिड़िया के साथ जाल कुतरने के लिए चल पड़ा। चूहे को आते देखकर जाल बेहद डर गया।

उसने गिड़गिड़ाकर कहा–

हमको कुतरे-वुतरे मति कोई,
हम हाथी छानेंगे, लोई।

जाल चल पड़ा हाथी के पैर छानने। जाल को देखकर हाथी की घिग्घी बँध गई। किसी तरह से उसके मुँह से आवाज़ निकली–

हमको छाने-वाने मति कोई,
हम समुद्र सोखेंगे, लोई।

हाथी चिड़िया के साथ समुद्र को सोखने के लिए चल पड़ा। हाथी को देखकर समुद्र काँपने लगा। विनती करते हुए बोला–

हमको सोखे-वोखे मति कोई,
हम आग बुझाएँगे, लोई!

समुद्र हहरा कर आग बुझाने चल पड़ा।

समुद्र को देखकर आग बेहद डरी। उसने समुद्र से प्रार्थना की–

हमको बुझाए-बुझाए मति कोई,
हम लाठी जारेंगे, लोई!

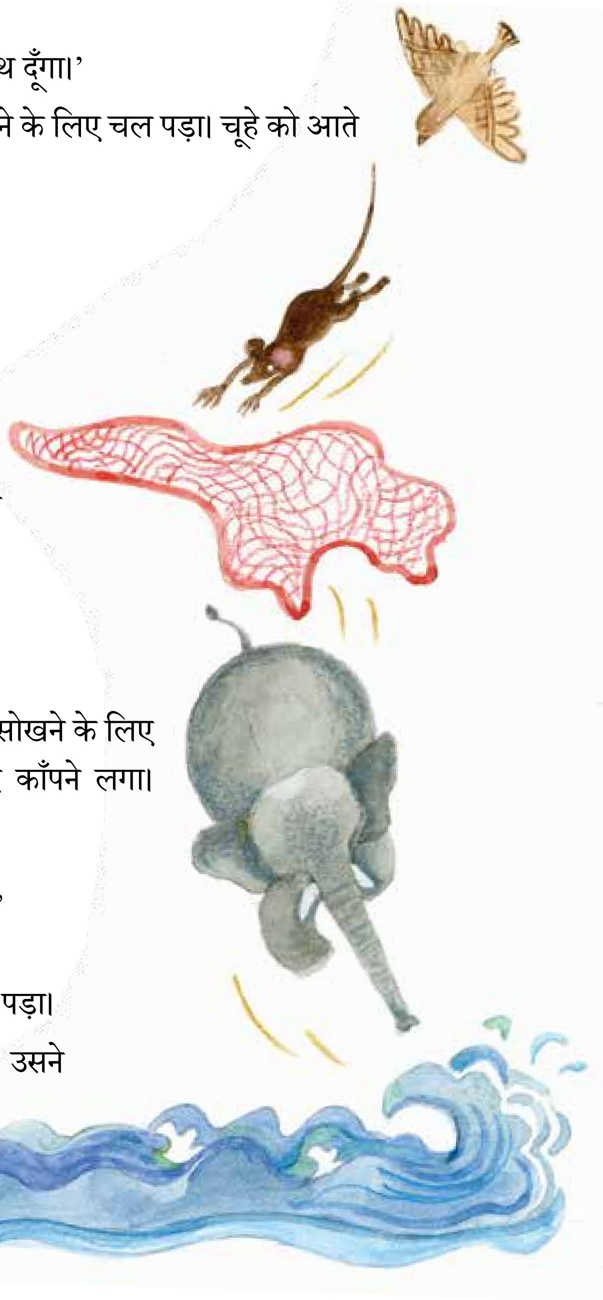

आग चल पड़ी लाठी को जलाने। आग को अपनी ओर आते देखकर लाठी गिड़-गिड़ाने लगी –

हमें जारे-वारे मति कोई,
हम साँप मारेंगे, लोई!

अब चिड़िया के साथ लाठी साँप को मारने चली। साँप सब कुछ समझ गया। उसने दूर से ही चि-ल्लाकर कहा–

हमें मारे-वारे मति कोई,
हम रानी डसेंगे, लोई!
साँप रानी को डसने चल पड़ा।
रानी साँप को देखकर बेहद डरी।
उसने साँप से प्रार्थना की–
हमको डसे-वसे मति कोई,
हम राजा छोड़ेंगे, लोई!

राजा को छोड़ने के लिए रानी तैयार हो गई। यह सूचना देने के लिए वह चिड़िया के साथ राजा के पास पहुँची।

राजा रानी का फ़ैसला सुनकर काँप गया। उसने रानी से कहा–

हमको छोड़े-वोड़े मति कोई,
हम बढ़ई दंडेंगे, लोई!

राजा बढ़ई के पास गया। राजा के गुस्से भरे चेहरे को देखकर बढ़ई थर-थर काँपने लगा। हाथ जोड़कर बोला–

हमको दंडे-वंडे मति कोई,
हम खूँटा चीरेंगे, लोई!

बढ़ई आरी लेकर चिड़िया के साथ खूँटे के पास आया तो खूँटे के होश ठिकाने आ गए। उसने बढ़ई से कहा–

हमको चीरे-वीरे मति कोई,

हम दाल निकालेंगे, लोई!

इसके बाद खूँटे ने दरार चौड़ा करके दाल का दाना बाहर निकाल दिया।

दाल के दाने को पाकर चिड़िया प्रसन्न होकर नाचने लगी।

अपने हक के लिए वह खड़ी थी और उसकी कोशिश सफ़ल हुई थी।

उसके बाद वह दाल के दाने को अपनी चोंच में लेकर फुर्र से अपने घोंसले की ओर उड़ गई!

– **अमरकांत**

कौन बनेगा निंगथउ (राजा)

बहुत-बहुत पहले की बात है। मणिपुर के कांगलइपाक (राज्य) में एक निंगथउ और एक लेइमा, (राजा और रानी) रहते थे। सब उन्हें बहुत प्यार करते थे।

निंगथउ और लेइमा अपने मीयम (प्रजा) का बड़ा खयाल रखते थे। 'हमारे मीयम सुखी रहें,' वे कहते, 'कांगलइपाक में शांति हो।' वहाँ के पशु-पक्षी भी अपने राजा-रानी को बहुत चाहते थे। निंगथउ और लेइमा हमेशा कहते – "कांगलइपाक में सभी को खुश रहना चाहिए। सिर्फ़ मनुष्यों को ही नहीं, पक्षियों, जानवरों और पेड़-पौधों को भी।"

निंगथउ और लेइमा के बच्चे नहीं थे। लोगों की एक ही प्रार्थना थी – 'हमारे निंगथउ और लेइमा का एक पुत्र हो। हमें अपना तुंगी निंगथउ मिल जाए, हमारा युवराज।'

फिर एक दिन, लेइमा ने एक पुत्र, एक मौचानीपा, को जन्म दिया। लोग बहुत खुश थे। सब अपने युवराज को देखने आए। बच्चे का सिर चूमकर उन्होंने कहा– "कितना सुंदर बेटा है, कितना सुंदर बेटा है।" राज्य में धूम मच गई। लोग ढोलों की ताल पर नाच उठे, बाँसुरी पर मीठी धुनें छेड़ीं।

उस वक्त उन्हें पता नहीं था कि अगले साल भी उसी तरह जश्न मनाया जाएगा। और उसके अगले साल फिर। हाँ, निंगथउ और लेइमा का एक और बेटा हुआ। फिर एक और।

अब उनके प्रिय राजा-रानी के तीन बेटे थे–सानाजाउबा, सानायाइमा और सानातोंबा।

बारह साल बाद, उनकी एक पुत्री हुई। उसका नाम सानातोंबि रखा गया।

बड़ी प्यारी थी वह, कोमल दिल वाली। सभी उसे बहुत चाहते थे।

कई साल बीत गए। बच्चे जवान हुए। एक दिन निंगथउ ने मंत्रियों को बुलाकर कहा–"अब वक्त आ गया है। हमें घोषणा करनी होगी कि कौन तुम्हारा युवराज बनेगा, तुम्हारा तुंगी निंगथउ।"

"इतनी जल्दी क्यों?" आश्चर्य से मंत्रियों ने एक-दूसरे से पूछा। पर जब उन्होंने करीब से निंगथउ को देखा, उन्हें भी लगा कि हाँ, वे सचमुच बूढ़े हो चुके थे। यह देखकर वे दुखी हो गए।

"अब मुझे तुम्हारा युवराज चुनना ही है", निंगथउ ने कहा।

मंत्री हक्के-बक्के रह गए—"पर हे निंगथउ, चुनाव की क्या ज़रूरत है? आपका सबसे बड़ा पुत्र, सानाजाउबा ही तो राजा बनेगा।"

निंगथउ ने जवाब दिया, "पुराने ज़माने में ऐसा होता था। सबसे बड़ा बेटा ही हमेशा राजा बनता था। लेकिन अब समय बदल गया है। इसलिए हमें उसे चुनना है जो राजा बनने के लिए सबसे योग्य है।"

"चलो, राजा चुनने के लिए एक प्रतियोगिता रखते हैं", लेइमा ने कहा।

और तब कांगलइपाक में एक मुकाबला रखा गया, एक घुड़दौड़।

जो भी उस खोगनंग तक, बरगद के पेड़ तक, सबसे पहले पहुँचेगा, युवराज उसे ही बनाया जाएगा।

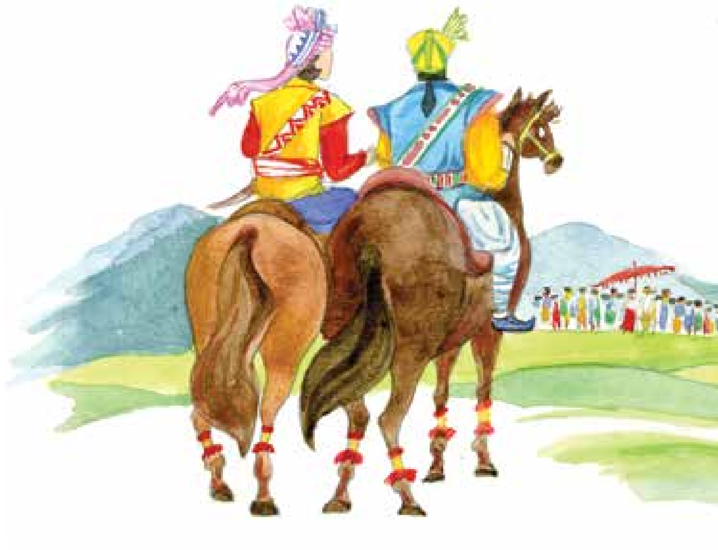

लेकिन एक अजीब बात हुई। सानाजाउबा, सानायाइमा और सानातोंबा– तीनों ने दौड़ एक साथ खत्म की। कौन जीता, कौन हारा, कहना मुश्किल था।

"देखो, देखो!" लोगों में शोर मच गया, "कितने अच्छे घुड़सवार!"

मगर सवाल वहीं का वहीं रहा– तुंगी निंगथउ कौन बनेगा?

निंगथउ और लेइमा ने अपने बेटों को बुलाया। निंगथउ ने कहा–

"सानाजाउबा, सानायाइमा, सानातोंबा, तुमने यह साबित कर दिया कि तुम तीनों ही अच्छे घुड़सवार हो। अब अपने-अपने तरीके से कुछ करो ताकि हम तुममें से युवराज चुन सकें।"

लड़कों ने राजा, रानी तथा लोगों को प्रणाम किया और अपने घोड़ों के पास चले गए। एक-दूसरे को देखकर वे मुसकराए। मगर मन-ही-मन तीनों यही सोच रहे थे कि क्या खास किया जाए।

अचानक, हाथ में बरछा लिए, सानाजाउबा अपने घोड़े पर सवार हो गया। उसने चारों तरफ़ देखा। लोगों में सन्नाटा-सा छा गया। 'सानाजाउबा, सबसे बड़ा राजकुमार, अब क्या कर दिखाएगा?' उन्होंने सोचा।

सानाजाउबा ने दूर खड़े शानदार खोंगनंग को ध्यान से देखा। उसने घोड़े को एड़ लगाई और घोड़ा झट से दौड़ पड़ा। वह तेज़, और तेज़, पेड़ की ओर बढ़ा।

"शाबाश! शाबाश!" सब चिल्लाए, "थाउरो! थाउरो!" और फिर एकदम शांत हो गए।

सानाजाउबा धड़धड़ाता हुआ खोंगनंग के पास पहुँचा। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, वह पेड़ को भेदकर घोड़े समेत उसके अंदर से निकल गया।

"थाउरो! थाउरो!" लोग फिर चिल्लाए।

अब दूसरे राजकुमार, सानायाइमा, की बारी थी। वह भला क्या करेगा?

सानायाइमा ने भी खोंगनंग को गौर से देखा। फिर उसने भी घोड़ा दौड़ाया, बहुत तेज़। साँस थामे सब चुपचाप देख रहे थे। पेड़ के नज़दीक आकर उसने घोड़े को कूदने के लिए एड़ लगाई। दोनों ऊपर कूदे, इतने ऊँचे कि एक अद्भुत छलाँग में वे उस विशाल वृक्ष को पार कर दूसरी ओर पहुँच गए। देखने वाले दंग रह गए। "कमाल है! कमाल है!" वे चिल्लाए।

और अब बारी थी छोटे राजकुमार, सानातोंबा की। उसने भी खोंगनंग की ओर घोड़ा दौड़ाया, और पलक झपकते ही उसे जड़ से उखाड़ डाला। बड़ी शान से फिर उसने पेड़ को उठाया और निंगथउ और लेइमा के सामने जाकर रख दिया।

बाप रे, कितना हंगामा मच गया– 'थाउरो! थाउरो! शाबाश! शाबाश!' की आवाज़ें पास के पहाड़ों से गूँज उठीं।

अब आप ही बताओ तुंगी निंगथउ किसे बनना चाहिए?

सानाजाउबा?

सानायाइमा?

सानातोंबा?

पेड़ को भेदकर कूदने वाला?

पेड़ के ऊपर से छलाँग लगाने वाला?

या फिर, पेड़ को उखाड़ने वाला?

ज़्यादातर लोग सानातोंबा को चाहते थे। क्या वह सबसे बलवान नहीं था? उसी ने तो इतने बड़े खोंगनंग को आसानी से उठा लिया था।

लोग बेचैन होने लगे। निंगथउ और लेइमा अपना फ़ैसला सुनाने में क्यों इतनी देर लगा रहे थे? वे कर क्या रहे थे?

निंगथउ और लेइमा सानातोंबि को देख रहे थे। पाँच साल की उनकी बेटी उदास और अकेली खड़ी थी। वह ज़मीन पर पड़े खोंगनंग को देख रही थी। पेड़ के आसपास पक्षी फड़फड़ा रहे थे। घबराए हुए, वे अपने घोंसले ढूँढ़ रहे थे।

सानातोंबि खोंगनंग के पास गई, "खोंगनंग मर गया", वह धीरे से बोली, "उसे बरछे से चोट लगी, और अब वह मर गया।"

सन्नाटा छा गया।

लेइमा ने सानातोंबि के पास जाकर उसे बाँहों से भर लिया। फिर कहा, "निंगथउ वही है जो देखे कि राज्य में सब खुश हैं। निंगथउ वही है जो राज्य में किसी को भी नुकसान न पहुँचाए।"

सब चौकन्ने होकर सुन रहे थे।

निंगथउ उठ खड़े हुए। उन्होंने अपने तीनों बेटों को देखा। फिर बेटी को देखा। उसके बाद अपनी प्रजा से कहा, "अगर कोई शासक बनने योग्य है, तो वह है छोटी सानातोंबि। खोंगनंग को चोट लगी तो उसे भी दर्द हुआ। उसी ने हमें याद दिलाया कि खोंगनंग में भी जान है।"

"सानातोंबि दूसरों का दर्द समझती है। उसे मनुष्य, पेड़-पौधे, जानवर, पक्षी– सबकी तकलीफ़ महसूस होती है।"

"मेरे बाद सानातोंबि ही राज्य सँभालेगी। मैं उसे कांगलइपाक की अगली लेइमा घोषित करता हूँ", निंगथउ ने एलान किया।

सभी ने मुड़कर उस छोटी लड़की, अपनी होने वाली रानी, को देखा। पाँच साल की बच्ची यूँ खड़ी थी जैसे खुद एक नन्हा-सा खोंगनंग हो। उसके चारों तरफ पक्षी फड़फड़ा रहे थे। कुछ उड़कर उसके कंधों पर आ बैठे, कुछ सिर पर। उसने दानों से भरे अपने छोटे हाथ फैलाए और धीरे-धीरे पास आकर पक्षी दाने चुगने लगे।

भूख की रजिस्ट्री

किसी मरुभूमि में एक नदी थी। उस नदी में एक मगरमच्छ रहता था। लेकिन दुख के साथ कहना पड़ता है कि जलचर उसे पसंद नहीं करते थे। इसका यह कारण नहीं था कि उसका मुँह अस्वाभाविक रूप से बड़ा था। जो कुछ भी हो, मुँह की बनावट तो बाहरी ढाँचा ठहरा।

उसकी कुख्याति का कारण उसकी असाधारण 'भूख' थी। किसी ने ठीक ही कहा है कि जितनी अधिक भूख बढ़ती जाती है, उतनी ही अधिक लोकप्रियता भी घटती जाती है। प्रेम एवं मित्रता तो तभी तक पनपती है जब तक पेट भरा रहता है। मगर उस मगरमच्छ का पेट कभी नहीं भरता था। वह प्रत्येक को निगलने के लिए तैयार रहता था। अत: वह सबके बीच कुख्यात हो गया था। मछलियों, मेढकों, मनुष्यों एवं बंदरों को निगलना, मगर अधिक पसंद करता था, यहाँ तक कि वह अपने संबंधियों को भी हज़म करने में नहीं हिचकिचाता था।

एक दिन वही मगर रेगिस्तानी नदी में भूखा और उदास लेटा था। वह उदास इसलिए नहीं था कि वह भूखा था, बल्कि उसकी भूख के लिए वहाँ कुछ मिल नहीं रहा था। सुबह का समय था। अनायास ही उसे नाश्ते की याद आ गयी। वह सोचने लगा—'कितना अच्छा होता, यदि मुझे अभी कोई आदमी नाश्ते के लिए मिल जाता। और कुछ नहीं तो कम से कम एक बंदर ही मिल जाता।' इतना सोचते ही उसकी भूख और भी बढ़ गयी। वहाँ कुछ नहीं आ रहा था। वह उदासी की हँसी हँसते हुए मन ही मन बुदबुदाने लगा–"साधारण खाना भी नसीब नहीं होता। 'घरेलू' खाना भी क्या बुरा है? लेकिन वह भी तो संभव नहीं। क्योंकि परिवार के अधिकांश सदस्यों को चट कर चुका हूँ। शेष गत बाढ़ में बह चुके हैं।"

वह भूख से तिलमिला उठा। उसकी आँखें बंद हो गयीं। उसने अपने खाली मुँह में अपने पंजों को रख लिया। लेकिन उसके बड़े मुँह के लिए उसके पंजे भी छूछे लगने लगे। अत: उसने झपकी लेना उचित समझा।

उधर नदी के किनारे एक लंबे खजूर के पेड़ पर एक बंदर आत्मविभोर था। वह सोच रहा था कि वह अधिक सुंदर कैसे बने। वह अत्यधिक सुंदर पूँछ, लंबी बाँहों और छोटे पैरों का होना अधिक पंसद करता था। बीच-बीच में अपने सघन रोंयेदार शरीर में से जुओं का शिकार कर रहा था। उस काम में उसे परिश्रम तो अवश्य ही करना पड़ रहा था, लेकिन संतोष एवं तृप्ति से वह खुश था। यकायक उसे नदी के मगर की कर्कश आवाज़ सुनाई पड़ी—"ऐ बंदर, तुम नीचे आ जाओ। मैं तुम्हें खाना चाहता हूँ।"

बंदर बहुत डर गया, लेकिन साहस करके उसने उत्तर दिया—"नहीं, कभी नहीं।"

मगर ने थूकते हुए कहा—"तो तुम नीचे नहीं उतरोगे? अच्छी बात है। मैं यहाँ तब तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा जब तक कि तुम भूख से बेहाल होकर नीचे नहीं उतरोगे। मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि जीवन ही भूख है।" बंदर ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह खजूर के पत्तों में अपना मुँह छिपाकर रोने लगा। उसे अपने माता-पिता और उस बँदरिया की याद आने लगी जिसके साथ थोड़े दिनों में उसकी शादी होने वाली थी। लेकिन, मगर की धमकी के सामने उसे अपना भविष्य अंधकारमय लगने लगा। मरता क्या न करता। उसने मगर की ओर एक पका खजूर फेंकते हुए कहा—"सुनते हो, मगर भाई! क्या तुम्हारी भी रजिस्ट्री हो चुकी है?"

मगर ने कहा—"कैसी रजिस्ट्री और किसकी रजिस्ट्री? मैं यह कुछ नहीं जानता। मैं तो तुम्हें खाना चाहता हूँ और मैं वह करके ही रहूँगा।"

बंदर ने कहा—"रेगिस्तान के सभी अच्छे लोगों ने अपनी रजिस्ट्री करा ली है। बिना रजिस्ट्रेशन के किसी का कुछ अस्तित्व नहीं।" बंदर की सलाह ने मगर के दिमाग में 'अस्तित्व' की बात जमा दी क्योंकि मगरों के पास बड़ा दिमाग होता नहीं। हो भी कैसे? जितना मुँह बड़ा होता है, दिमाग भी उतना ही छोटा होता है। अत: मगर की विचार-शक्ति समाप्त हो गयी और वह बोला—"अच्छा, मैं अपनी रजिस्ट्री करा लूँगा, लेकिन यह तो बताओ कि रजिस्ट्री कहाँ होती है?"

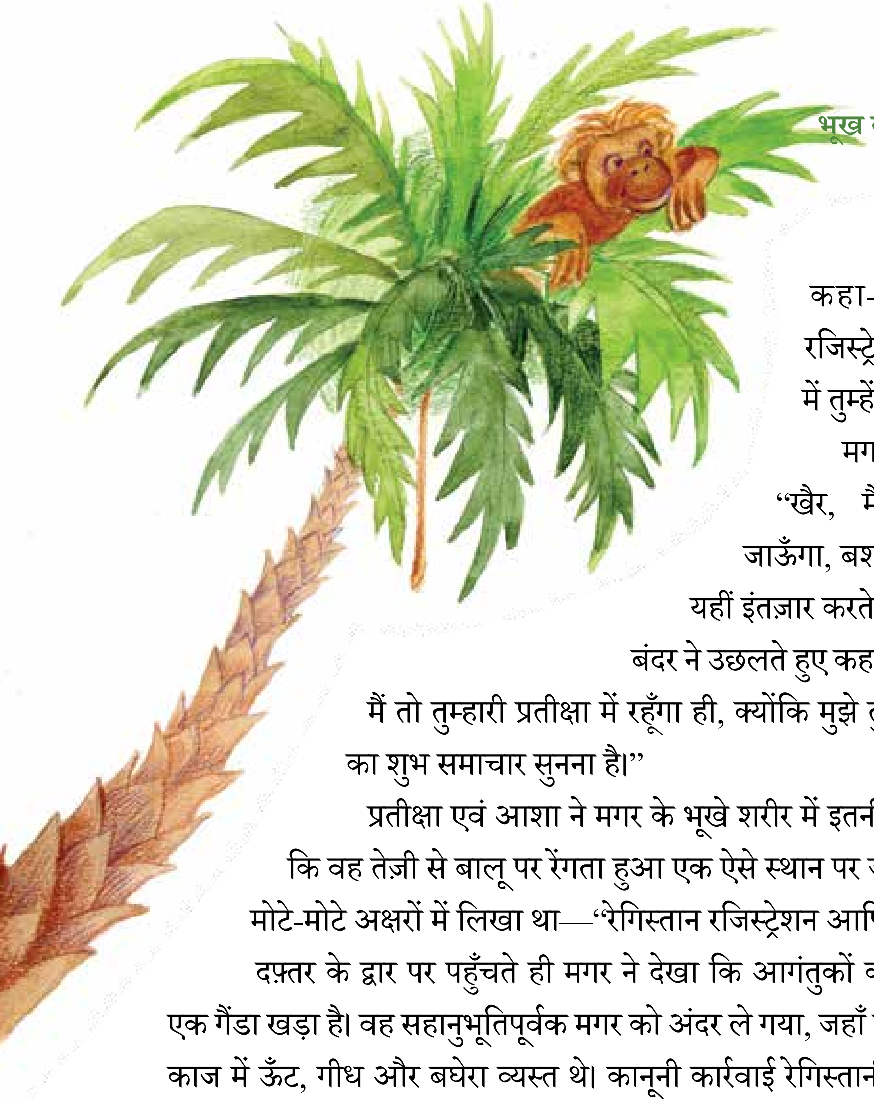

बंदर ने खुश होकर कहा—"रेगिस्तान रजिस्ट्रेशन आफिस में तुम्हें जाना पड़ेगा।"

मगर ने कहा—"खैर, मैं वहाँ चला जाऊँगा, बशर्ते कि तुम मेरा यहीं इंतज़ार करते रहो।"

बंदर ने उछलते हुए कहा—"क्यों नहीं! मैं तो तुम्हारी प्रतीक्षा में रहूँगा ही, क्योंकि मुझे तुम्हारी रजिस्ट्री का शुभ समाचार सुनना है।"

प्रतीक्षा एवं आशा ने मगर के भूखे शरीर में इतनी शक्ति ला दी कि वह तेज़ी से बालू पर रेंगता हुआ एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचा, जहाँ मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था—"रेगिस्तान रजिस्ट्रेशन आफिस"।

दफ़्तर के द्वार पर पहुँचते ही मगर ने देखा कि आगंतुकों की अगवानी में एक गैंडा खड़ा है। वह सहानुभूतिपूर्वक मगर को अंदर ले गया, जहाँ दफ़्तर के काम-काज में ऊँट, गीध और बघेरा व्यस्त थे। कानूनी कार्रवाई रेगिस्तानी विशेषज्ञ ऊँट द्वारा की जा रही थी। वह अपनी लंबी गर्दन ऊँची करके बैठा था। उसकी गर्दन में सार्वजनिक ख्याति का एक तमगा भी लटक रहा था। गीध सहायक की हैसियत से ऊँट की सहायता में तत्पर था। उसका सिर गंजा था। बघेरा वहाँ एक मेज़ पर बैठकर रजिस्ट्रेशन का काम निपटा रहा था।

मगर ने ज्यों ही वहाँ बैठे हुए लोगों को देखा तो उसके मुँह में पानी भर आया, क्योंकि वहाँ पर जितने भी बैठे थे वे सभी उसके प्रिय खाद्य पदार्थ थे। भूख के मारे उसका मुँह चटपटाने लगा।

बघेरे ने मगर को डाँटते हुए कहा—"दाँत खटखटाना बंद करो। क्या बदतमीज़ी है?"

मगर को क्रोध अवश्य आया, लेकिन वह चुपचाप बैठा रहा, क्योंकि उसे अपना रजिस्ट्रेशन जो करवाना था।

ऊँट ने मगर से पूछा —“तुम्हें क्या चाहिए?”

“मैं अपनी रजिस्ट्री कराना चाहता हूँ।”

“किस चीज की रजिस्ट्री?”

“अपनी भूख की रजिस्ट्री।”

“कैसी मूर्खता की बात करते हो?”

बघेरे ने धीरे से कहा—“भूख तो सबके पास होती है। इसमें क्या विशेषता हुई?”

मगर ने लजाकर कहा—“तो फिर मेरे बड़े मुँह की ही सही।” तथा आहिस्ता से उसने अपने जबड़े बंद कर लिए।

गीध ने अपनी राय प्रकट करते हुए कहा—“यह तो ठीक है कि तुम्हारा मुँह अत्यधिक बड़ा है, लेकिन बहुत से मनुष्य ऐसे भी हैं जिनके मुँह तुमसे भी बड़े हैं।”

यह सुनते ही मगर आगबबूला हो गया और अपनी पूँछ पटकते हुए चिल्लाकर बोला—“कुछ भी हो, मेरी रजिस्ट्री तो होनी ही चाहिए।”

बघेरे ने दहाड़ते हुए कहा—“शांत रहो, नहीं तो निकाल बाहर किए जाओगे।”

ऊँट ने बिलबिलाकर कहा—“भाई, तुम शांति से क्यों नहीं बैठते हो?”

गीध ने नम्रतापूर्वक कहा—“भाई मगर, तुम मेरी बात मानो तो तुम अपने दाँतों की रजिस्ट्री करा सकते हो, क्योंकि जब तुम अपना मुँह खोलते हो तो वे अद्वितीय लगते हैं। इनकी रजिस्ट्री मिसिंग-मशीन के ‘ट्रेडमार्क’ के अंतर्गत हो जाएगी।”

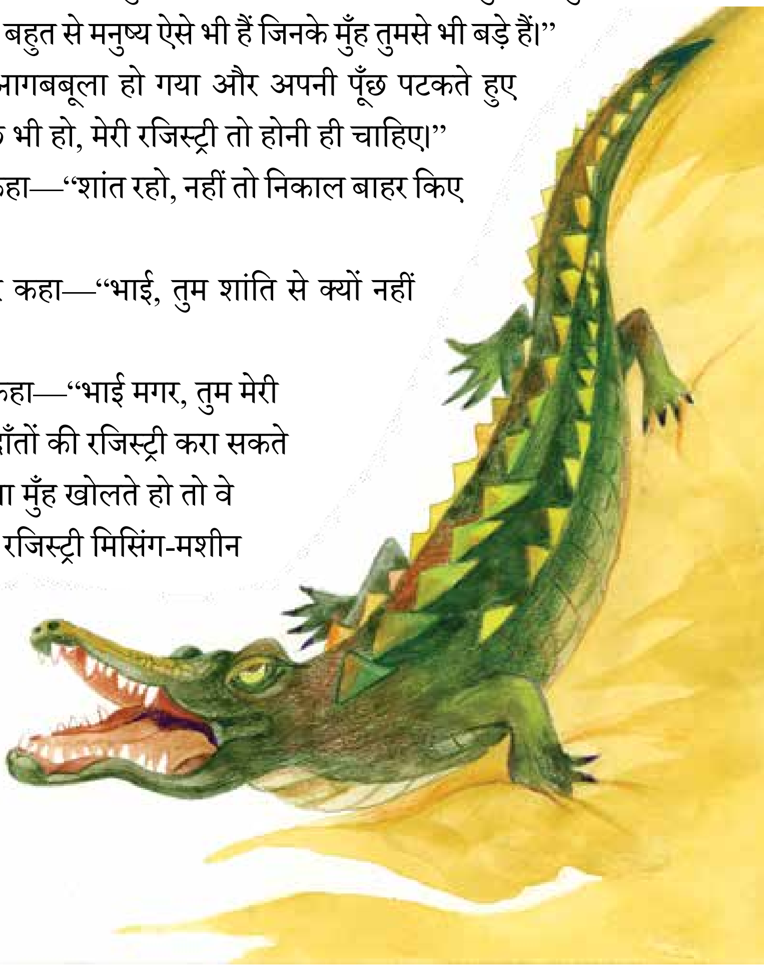

बघेरे ने ऊँट से कहा—"अच्छा, आप रजिस्टर में से नाम तो पढ़िए।"

ऊँट पढ़ने लगा—"पेटेंट नं.1 – फणधारी साँप – अपने सिर की छत्री के लिए – विभाग – सिर की पोशाक। पेटेंट नं. 2 – कंगारू – पेट की थैली के लिए – विभाग – फैंसी पोशाक। पेटेंट नं. 3 – गैंडा – नाक के सींग के लिए – विभाग – आभूषण।"

गीध ने मगर से पूछा—"अच्छा, अब तुम बताओ, तुम्हें किस विभाग में रजिस्ट्री करानी है। आभूषण या पोशाक?"

मगर ने कहा—"मुझे आभूषण या पोशाक से क्या लेना-देना? मेरे लिए तो भूख ही जीवन-मरण है। मैं केवल अपनी भूख की रजिस्ट्री कराना चाहता हूँ।"

गीध ने कहा—"लेकिन हम तुम्हारी भूख की रजिस्ट्री तो नहीं कर सकते। हाँ, तुम्हारे दाँतों की कतरणयंत्र के पेटेंट के रूप में रजिस्ट्री हो जाएगी।"

बघेरे ने गरज कर कहा—"अब बकवास बंद करो। अच्छा, लिखिए पेटेंट नं. 4 – विभाग – रसोईघर का सामान। नमस्ते।"

इतना कहकर बघेरा खड़ा हो गया। दफ़्तर के नियमानुसार समय पर सभी जाने को तैयार हो गये। ऊँट ने झटपट एक प्रमाण-पत्र तैयार कर दिया। गीध ने मगर की ओर बढ़ाते हुए कहा—"यह रहा तुम्हारी रजिस्ट्री का प्रमाण-पत्र। इसे सावधानीपूर्वक अपने पास रखना। यह एक प्रकार का आभूषण है। इससे अधिक कुछ भी नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि इससे तुम्हें आत्म-संतोष मिलेगा। तुम इसे भूलकर भी मत निगलना। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। अच्छा नमस्ते।"

जब मगर नदी में पहुँचा तो उसकी भूख और अधिक बढ़ चुकी थी। वहाँ बंदर का कोई पता न था। कमज़ोरी ने उसे पूर्णतया शिथिल बना दिया था। वह बहुत देर तक किनारे पर बैठकर सोचता रहा। बंदर की चालाकी और उसकी अपनी बेवकूफ़ी उसे और भी अधिक सता रही थी। उधर नदी में सभी जलचर अपने-अपने शिकार पकड़ने में व्यस्त थे।

भूखे मगर के मुँह से आवाज़ निकलना भी कठिन था। लेकिन, उसने अपनी नवअर्जित विशेषता के प्रदर्शन को कुछ आवश्यक समझा और धीरे से कहा—"मैं अब रजिस्टर्ड हो चुका हूँ। मैं खा नहीं सकता। मेरे मुँह में एक विशिष्ट प्राणी होने का प्रमाण-पत्र है।"

छोटे मगर ने कहा—“जो कुछ भी हो, तुम्हारे चेहरे से पता चलता है कि बहुत ही भूखे हो। तुम अपने प्रमाण-पत्र को यहीं किनारे पर रखकर मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें पेट भरकर खाना खिलाऊँगा।”

मगर ने कहा—“नहीं, नहीं। वह बदमाश बंदर यह चुराकर ले जाएगा।”

छोटे मगर ने कहा—“मेरी बात मानो और इसे यहीं थूक डालो। ऐसे प्रमाण-पत्र से क्या लाभ, जो तुम्हें भूखों मार डाले।”

लेकिन ‘प्रमाणित’ मगर टस से मस नहीं हुआ। अंत में, छोटे मगर को क्रोध आ गया और वह हठी मगर का पिछला पैर पकड़कर अपने मुँह में डालने लगा। बेचारा मगर डर के मारे अपने प्रमाण-पत्र को निगल गया। अब तो उसकी और भी बुरी हालत हो गई और कुछ ही दिनों में वह चल बसा।

उधर वह बंदर, जिससे अभागे मगर की मुठभेड़ हुई थी, अपनी प्रियतमा बंदरिया के साथ शादी करके सुखपूर्वक जीवन बिताने लगा। हाँ, जब कभी वह नदी किनारे वाले पेड़ पर अपनी बंदरिया के साथ आ बैठता तो उसे अनायास ही विगत घटना याद आ जाती। उसकी बंदरिया अपने बंदर की आप-बीती सुनकर बोल उठती—“अच्छा, यह बताओ कि तुम तो कभी अपने को पेटेंट नहीं कराओगे।” और बंदर अपनी पूँछ को उसके गले में लपेटते हुए कहता—“छि:, मैं उस मूर्ख मगर की तरह थोड़े ही पागल हूँ।”

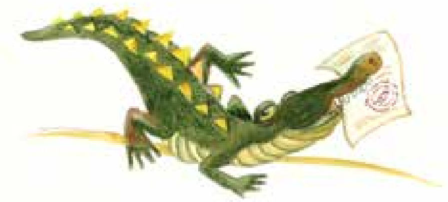

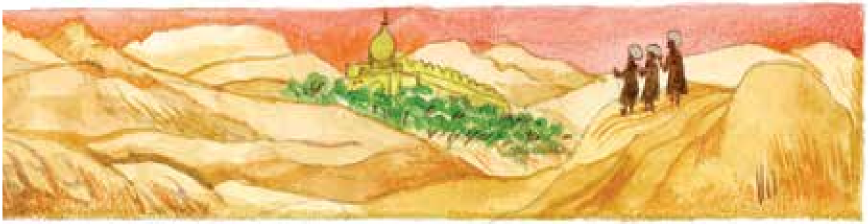

तीन अक्लमंद भाई

एक बार का ज़िक्र है कि कहीं एक गरीब आदमी रहता था जिसके तीन बेटे थे। वह अक्सर अपने बेटों से कहता—"मेरे बेटों! हमारे पास न तो रेवड़ है और न ही सोना, कुछ भी तो नहीं है। इसलिए तुम्हें एक दूसरी ही किस्म का खज़ाना जमा करना चाहिए—अधिक समझने और जानने की कोशिश करो। कोई भी चीज़ तुम्हारी नज़र से न बच पाये। बड़े-बड़े रेवड़ों की जगह तुम्हारे पास पैनी नज़र होगी और सोने की जगह तेज़ दिमाग होगा। ऐसी दौलत जमा कर लेने पर तुम्हें कभी किसी चीज़ की कमी न रहेगी और तुम दूसरों के मुकाबले में उन्नीस नहीं रहोगे।"

वक्त गुज़रा और कुछ बाद समय बूढ़ा चल बसा। भाई मिल बैठे, उन्होंने सारी स्थिति पर विचार किया और फिर बोले—"हमारे लिए यहाँ कुछ भी तो करने को नहीं। आओ, घूम फिरकर दुनिया को देखें। ज़रूरत होने पर हम चरवाहों या खेत-मज़दूरों का काम कर लेंगे। हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे।"

चुनांचे वे तैयार होकर सफ़र पर चल दिये।

उन्होंने सुनसान-वीरान घाटियाँ लाँघीं और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों को पार किया। इस तरह वे लगातार चालीस दिनों तक चलते रहे।

उनके पास जितनी खुराक थी, अब तक खत्म हो गई थी। वे थककर चूर हो गये थे और उनके पैरों में छाले पड़ गये थे, मगर सड़क थी कि खत्म होने को नहीं आ रही थी। वे आराम करने के लिए रुके और फिर आगे चल दिये।

आखिर उन्हें अपने सामने वृक्ष, बुर्ज और मकान नज़र आये—वे एक बड़े शहर के नज़दीक पहुँच गये थे।

तीनों भाई बहुत खुश हुए और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगे।

“जब वे शहर के बिलकुल निकट पहुँच गये तो सबसे बड़ा भाई अचानक रुका, उसने ज़मीन पर नज़र डाली और बोला—

“थोड़ी ही देर पहले यहाँ से एक बहुत बड़ा ऊँट गुज़रा है।”

वे थोड़ा और आगे गये तो मझला भाई रुका और सड़क के दोनों ओर नज़र डालकर बोला—

“ऊँट काना था।”

वे कुछ और आगे गये तो सबसे छोटे भाई ने कहा—

“ऊँट पर एक औरत और एक बच्चा सवार थे।”

“बिलकुल सही!” दोनों बड़े भाइयों ने कहा और वे तीनों फिर आगे बढ़ चले। थोड़ी देर बाद एक घुड़सवार उनके पास से गुज़रा। सबसे बड़े भाई ने उसकी ओर देखकर पूछा—

"घुड़सवार, तुम किसी खोई हुई चीज़ की तलाश कर रहे हो न?" घुड़सवार ने घोड़ा रोककर जवाब दिया—

“हाँ।”

"तुम्हारा ऊँट खो गया है न?" सबसे बड़े भाई ने पूछा।

“हाँ।”

"बहुत बड़ा-सा?"

“हाँ।”

“वह काना है न?” मझले भाई ने पूछा।

“हाँ।”

“एक छोटे-से बच्चे के साथ उस पर औरत सवार थी न?” सबसे छोटे भाई ने सवाल किया।

घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शक की नज़र से देखा और बोला—

"आह तो तुम्हारे पास है मेरा ऊँट! जल्दी बताओ, तुमने उसका क्या किया?

"हमने तुम्हारे ऊँट की शक्ल तक नहीं देखी," भाइयों ने जवाब दिया।

"तो तुम्हें उसके बारे में सभी बातें कैसे मालूम हुईं?"

"क्योंकि हम अपनी आँखों से और दिमाग से काम लेना जानते हैं", भाइयों ने जवाब दिया, "जल्दी से उस दिशा में अपना घोड़ा दौड़ाओ। वहाँ तुम्हें तुम्हारा ऊँट मिल जाएगा।"

"नहीं", ऊँट के मालिक ने जवाब दिया, "मैं उस दिशा में नहीं जाऊँगा। मेरा ऊँट तुम्हारे पास है और तुम्हें ही उसे मुझे लौटाना पड़ेगा।"

"हमने तो तुम्हारे ऊँट को देखा तक नहीं", भाइयों ने परेशान होते हुए कहा।

मगर घुड़सवार उनकी एक भी सुनने को तैयार नहीं था। उसने अपनी तलवार निकाल ली और उसे ज़ोर से घुमाते हुए तीनों भाइयों को अपने आगे-आगे चलने का हुक्म दिया। इस तरह वह उन्हें सीधे अपने देश के बादशाह के महल में ले गया। इन तीनों भाइयों को संतरियों के सुपुर्द कर वह खुद बादशाह के पास गया।

"मैं अपने रेवड़ों को पहाड़ों पर लिये जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी बीवी मेरे छोटे-से बेटे के साथ एक बड़े-से काने ऊँट पर मेरे पीछे-पीछे आ रही थी। किसी तरह उनका ऊँट पीछे रह गया और वे रास्ते से भटक गये। मैं उन्हें खोजने गया तो मुझे रास्ते में तीन आदमी मिले जो पैदल चले जा रहे थे। मुझे पूरा यकीन है कि उन्होंने मेरा ऊँट चुराया है और मेरी बीवी तथा बेटे को मार डाला है।"

"तुम ऐसा क्यों समझते हो?" जब वह आदमी अपनी बात कह चुका तो बादशाह ने पूछा।

"इसलिए कि मैंने उन लोगों से इस संबंध में एक भी शब्द नहीं कहा था, फिर भी उन्होंने मुझे यह बताया कि ऊँट बहुत बड़ा और काना है तथा उस पर एक औरत बच्चे के साथ सवार है।"

बादशाह ने थोड़ी देर सोच-विचार किया और फिर बोला –

"जैसा कि तुम कहते हो तुम्हारे बताये बिना ही तुम्हारे ऊँट के बारे में उन्होंने सभी कुछ ऐसे अच्छे ढंग से बयान किया है, तो ज़रूर उन्होंने उसे चुराया होगा। जाओ, उन चोरों को यहाँ लाओ।"

ऊँट का मालिक बाहर गया और तीनों भाइयों को साथ लिये हुए झटपट अंदर आया।

"चोरो, फ़ौरन बताओ!" बादशाह उन्हें धमकाते हुए चिल्लाया। "फ़ौरन जवाब दो, तुमने इस आदमी का ऊँट कहाँ गायब किया है?"

"हम चोर नहीं हैं, हमने इसका ऊँट कभी नहीं देखा", भाइयों ने जवाब दिया।

तब बादशाह बोला –

"मालिक के कुछ भी बताये बिना तुमने ऊँट के बारे में बिलकुल सही तौर पर बयान किया है। अब तुम यह कहने की कैसे जुर्रत करते हो कि तुमने उसे नहीं चुराया!"

"बादशाह, इसमें तो अचंभे की कोई बात नहीं है।" भाइयों ने जवाब दिया। "बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम किसी चीज़ को अपनी नज़र से नहीं चूकने देते। हमने चीज़ों को पैनी नज़र से देखने और दिमाग से सोचने के काम में बहुत वक्त लगाया है। इसीलिए ऊँट को देखे बिना ही हमने बता दिया कि वह कैसा है।"

बादशाह हँस दिया।

"किसी चीज़ को देखे बिना ही उसके बारे में क्या इतना कुछ जानना मुमकिन हो सकता है?" उसने पूछा।

"हाँ, मुमकिन है", भाइयों ने जवाब दिया।

"तो ठीक है, हम अभी तुम्हारी सच्चाई की जाँच-पड़ताल करेंगे।"

बादशाह ने इसी समय अपने वज़ीर को बुलाया और उसके कान में कुछ फुस-फुसाया। वज़ीर फ़ौरन महल के बाहर चला गया। मगर बहुत जल्दी ही वह दो नौकरों के साथ लौटा। नौकर एक टिकठी पर बहुत बड़ी-सी पेटी रखकर लाये थे। नौकरों ने पेटी को बहुत सावधानी से दरवाज़े के पास ऐसे रख दिया कि वह बादशाह को दिखाई दे सके और खुद एक तरफ़ को हट गये। तीनों भाई दूर से खड़े उन्हें देखते रहे। उन्होंने इस बात को गौर से देखा कि पेटी कहाँ से और कैसे लाई गई थी, किस ढंग से फ़र्श पर रखी गई थी।

"हाँ, तो चोरो, हमें बताओ कि उस पेटी में क्या है?" बादशाह ने कहा।

"बादशाह सलामत, हम तो पहले ही यह अर्ज़ कर चुके हैं कि हम चोर नहीं हैं", सबसे बड़े भाई ने कहा।, "पर यदि आप चाहते हैं तो मैं आप को यह बता सकता हूँ कि उस पेटी में क्या है। उसमें कोई छोटी-सी गोल चीज़ है।"

"उसमें अनार है", मझला भाई बोला।

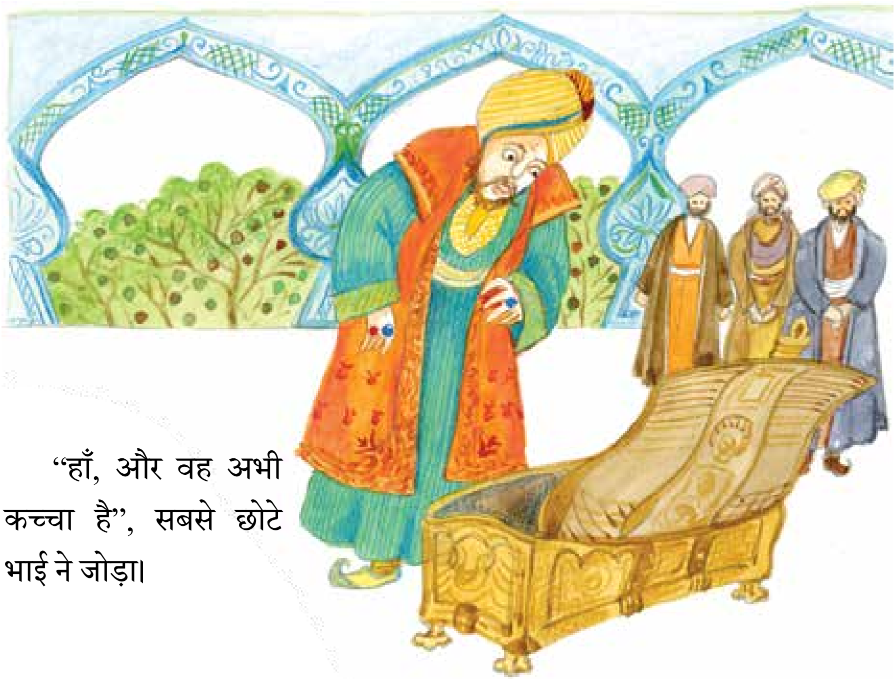

"हाँ, और वह अभी कच्चा है", सबसे छोटे भाई ने जोड़ा।

यह सुनकर बादशाह ने पेटी को नज़दीक लाने का हुक्म दिया। नौकरों ने फ़ौरन हुक्म पूरा किया। बादशाह ने नौकरों से पेटी खोलने के लिए कहा। पेटी खुल जाने पर उसने उसमें झाँका। जब उसे, उसमें कच्चा अनार दिखाई दिया तो उसकी हैरानी की कोई हद न रही।

आश्चर्यचकित बादशाह ने अनार निकालकर वहाँ हाज़िर सभी लोगों को दिखाया। तब उसने ऊँट के मालिक से कहा–

"इन लोगों ने यह साबित कर दिया कि ये चोर नहीं हैं। वास्तव में ये बहुत ही समझदार लोग हैं। तुम कहीं और जाकर अपने ऊँट की तलाश करो।"

बादशाह के महल में उस समय हाज़िर सभी लोगों की हैरानी का कोई ठिकाना न था, मगर सबसे बढ़कर तो खुद बादशाह हैरान था। उसने सभी तरह के बढ़िया और लज़ीज़ खाने मँगवाये और लगा इन भाइयों की खातिरदारी करने।

"तुम लोग बिलकुल बेकसूर हो और जहाँ भी जाना चाहो जा सकते हो। मगर जाने के पहले तुम मुझे सारी बात तफ़सील के साथ बताओ। तुम्हें यह कैसे पता चला कि उस आदमी का ऊँट गुम हुआ है और तुमने यह कैसे जाना कि ऊँट कैसा था।"

सबसे बड़े भाई ने कहा—

"धूल पर उसके पैरों के निशानों से मुझे मालूम हुआ कि कोई बहुत बड़ा ऊँट वहाँ से गुज़रा है। जब मैंने अपने पास से गुज़रनेवाले घुड़सवार को अपने चारों ओर नज़र दौड़ाते देखा तो उसी वक्त मेरी समझ में यह बात आ गई कि वह क्या खोज रहा है।"

"बहुत खूब!" बादशाह ने कहा। "अच्छा, अब यह बताओ कि तुम में से किसने इस घुड़सवार को यह बताया था कि उसका ऊँट काना है? कानापन तो सड़क पर निशान नहीं छोड़ता।"

"मैंने इस बात का अनुमान इसलिए लगाया कि सड़क के दायीं ओर की घास तो ऊँट ने चरी थी, मगर बायीं ओर की घास ज्यों की त्यों थी", मझले भाई ने जवाब दिया।

"बहुत खूब!" बादशाह ने कहा, "तुममें से यह अनुमान किसने लगाया था कि उस पर बच्चे के साथ एक औरत सवार थी?"

"मैंने", सबसे छोटे भाई ने जवाब दिया, "मैंने देखा कि एक जगह पर ऊँट के घुटने टेककर बैठने के निशान बने हुए थे। उनके करीब ही रेत पर एक औरत के जूतों के चिह्न दिखाई दिये। साथ ही छोटे-छोटे पैरों के निशान थे, जिससे मुझे पता चला कि औरत के साथ एक बच्चा भी था।"

"बहुत खूब! तुमने बिलकुल सही कहा है", बादशाह बोला, "मगर तुम लोगों को यह कैसे पता चला कि पेटी में एक कच्चा अनार है? यह बात तो मेरी समझ में बिलकुल नहीं आ रही।"

सबसे बड़े भाई ने कहा–

"जिस तरह दोनों नौकर उसे उठाकर लाये थे, उससे बिलकुल ज़ाहिर था कि वह ज़रा भी भारी नहीं है। जब वे पेटी को फ़र्श पर टिका रहे थे तो मुझे उसके अंदर किसी छोटी-सी गोल चीज़ के लुढ़कने की आवाज़ सुनाई दी।"

मझला भाई बोला–

"मैंने ऐसा अनुमान लगाया कि चूँकि पेटी बगीचे की तरफ़ से लाई गई है और उसमें कोई छोटी-सी गोल चीज़ है, तो वह ज़रूर अनार ही होगा। कारण कि आपके महल के आसपास अनारों के बहुत-से पेड़ लगे हुए हैं।"

"बहुत खूब!" बादशाह ने कहा और फिर उसने सबसे छोटे भाई से पूछा—

"मगर तुम्हें यह कैसे पता चला कि अनार कच्चा है?"

"इस वक्त तक बगीचे में सभी अनार कच्चे हैं। यह तो आप खुद ही देख सकते हैं", उसने जवाब दिया और खुली हुई खिड़की की ओर संकेत किया।

बादशाह ने बाहर देखा तो पाया कि बगीचे में लगे अनार के सभी वृक्षों पर कच्चे अनार लटक रहे थे।

बादशाह इन भाइयों की असाधारण पैनी नज़र और तेज़ दिमाग से हैरान रह गया।

"धन-दौलत या दुनियावी चीज़ों के नज़रिये से तो तुम बेशक अमीर नहीं हो, मगर तुम्हारे पास अक्ल का बहुत खज़ाना ज़रूर है", उसने तारीफ़ करते हुए कहा।

तोता और राजा

एक राजा था। उसके महल के उपवन में एक आम का पेड़ था। उस आम के पेड़ पर एक तोता रहता था। एक बार तोते को कहीं से सोने की एक अशर्फ़ी मिल गई। तोता अशर्फ़ी का भला क्या करता? इसलिए तोते ने वह अशर्फ़ी लाकर राजा को दे दी। तोते को लगा कि राजा उसे धन्यवाद देगा लेकिन राजा ने उससे कुछ नहीं कहा। इसके बाद राजा जब अपनी राजसभा में पहुँचा तो अपने सभासदों को अशर्फ़ी दिखा-दिखाकर कहने लगा कि 'ये देखो, मेरे पास कितनी सुंदर और कितनी कीमती अशर्फ़ी है।'

'यह आपको कहाँ से मिली?' एक सभासद ने पूछा।

'यह मेरे पुरखों के समय से मेरे पास है।' राजा ने झूठ बोलते हुए कहा।

जब इस बात का पता तोते को चला तो उसे बहुत क्रोध आया कि राजा ने सभासदों को यह क्यों नहीं बताया कि यह अशर्फ़ी एक तोते ने दी है। तोते ने राजा के पास जाकर उससे झूठ बोलने का कारण पूछा।

'यदि मैं कहता कि तुमने मुझे यह अशर्फ़ी दी है तो लोग मुझ पर हँसते कि मैंने एक तोते से अशर्फ़ी ले ली।' राजा ने कहा।

'लेकिन सच तो यही है।' तोता बोला।

'इससे क्या होता है? जो मैं कहूँगा वही सच माना जाएगा।' राजा इठलाकर बोला।

'लेकिन मैं सब को सच बताकर रहूँगा। क्योंकि जब मैंने आपको यह अशर्फ़ी दी है तो आपको मुझे इसका श्रेय देना ही चाहिए, भले ही मैं तोता हूँ तो इससे क्या

होता है? व्यक्ति अपने कर्म से बड़ा होता है, जाति, धर्म या समुदाय से नहीं। आप राजा हैं, आपको यह बात समझनी चाहिए।' तोते ने राजा से कहा।

'ठीक है, तुमसे जो बने सो कर लो। तुम्हारा कहा कोई नहीं मानेगा।' राजा हँस कर बोला।

राजा के व्यवहार से क्षुब्ध होकर तोता अपने घोंसले में लौट आया। कुछ देर बाद तोता पेड़ की सबसे ऊँची फुनगी पर बैठ गया और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा—

'बात सुनो सब करके गौर,
राजा ठहरा पक्का चोर!
उसने एक अशर्फ़ी पाई
जो तोते ने उसे दिलाई
राजा अब कहता है 'अपनी'
जो है एकदम चीज़ पराई!'

राजा के नौकरों ने तोते का गाना सुना तो भाग कर राजा के पास पहुँचे और तोते के गाने के बारे में उसे बताया। राजा समझ गया कि तोता सबको असली बात

बताए बिना नहीं मानेगा। उसने नौकरों को आदेश दिया कि जाकर उस तोते को मार डालें।

नौकर राजा का आदेश पाकर तोते को मारने जा पहुँचे। मगर तोते को मारना आसान नहीं था। एक तो वह सबसे ऊँची डाल की फुनगी पर बैठा था और उस पर यहाँ-वहाँ फुदक जाता था। तोते ने देखा कि राजा ने उसे मारने के लिए अपने नौकर भेजे हैं तो वह और ज़ोर-ज़ोर से गाने लगा–

बात सुनो सब करके गौर,
राजा ठहरा पक्का चोर!
उसने एक अशर्फ़ी पाई
जो तोते ने उसे दिलाई
राजा अब कहता है 'अपनी '
जो है एकदम चीज़ पराई
मैंने जो ये, बात बताई
राजा ने डर, फ़ौज बुलाई
इक छोटे से तोते को भी
खुद न मार सका यह भाई!

राजा के नौकरों ने तोते का गाना सुना तो भाग कर राजा के पास पहुँचे और तोते के गाने के बारे में उसे बताया। राजा को बहुत गुस्सा आया। उसने स्वयं जाकर तोते को मारने का निश्चय किया। वह ढाल-तलवार लेकर निकला। तोते ने देखा कि राजा उसे मारने के लिए तलवार और ढाल लेकर आया है तो वह और ज़ोर-ज़ोर से गाने लगा–

बात सुनों सब करके गौर,
राजा ठहरा पक्का चोर!

उसने एक अशर्फ़ी पाई
जो तोते ने उसे दिलाई
राजा अब कहता है 'अपनी'
जो है एकदम चीज़ पराई
मैंने जो ये बात बताई
राजा ने डर फ़ौज बुलाई
इक छोटे से तोते को भी
खुद न मार सका यह भाई
अब होगी उसकी जगत हँसाई!

इस पर नौकरों ने राजा को समझाया, 'महाराज, एक छोटे से तोते को मारने के लिए ढाल-तलवार की क्या आवश्यकता? उसे तो गुलेल से मार गिराया जा सकता है।' राजा को नौकरों की बात पसंद आई। उसने गुलेल उठाई और जा पहुँचा पेड़ के नीचे।

तोता दिखते ही राजा ने गुलेल से निशाना साधा और गुलेल चला दी। तोता तो फुदक कर दूसरी डाल पर जा बैठा, लेकिन गुलेल का कंकड़ डाल से टकराकर पलट कर राजा को आ लगा। इस प्रकार नन्हे से तोते ने राजा को उसके झूठ का दंड दे दिया।

सबसे बड़ा कौन?

बहुत ही पुराने ज़माने की बात है कि किसी गाँव में तीन भाई रहते थे। उनका एक साझा चितकबरा बैल था।

एक दिन भाइयों ने हिस्सेदारी खत्म कर अलग-अलग रहने का फ़ैसला किया। मगर तीन भाइयों के बीच एक बैल कैसे बाँटा जाता? पहले तो उन्होंने यह सोचा कि उसे बेच दें, मगर पास-पड़ोस में कोई ऐसा अमीर आदमी नहीं मिला जो उसे खरीदता। तब उन्होंने उसे ज़िबह करने की बात सोची। मगर वे ऐसा भी न कर पाये, उन्हें बैल पर तरस आया। किसी एक भाई को बैल दें, वे इसके लिए भी राजी न हो सके।

चुनांचे उन्होंने किसी अक्लमंद आदमी के पास जाने का फ़ैसला किया ताकि वह उनका यह मामला निपटा दे।

"अक्लमंद आदमी जैसा कहेगा, हम वैसा ही करेंगे", उन्होंने कहा। वे बैल को लेकर अक्लमंद आदमी के गाँव की ओर चल दिए। सबसे बड़ा भाई बैल के सिर के साथ-साथ चल रहा था, मँझला बैल की बगल में और सबसे छोटा बैल के पीछे-पीछे चलता हुआ उसे छड़ी से हाँकता जा रहा था।

पौ फटने के समय एक घुड़सवार सबसे छोटे भाई के बराबर पहुँचा, उससे सलाम-दुआ की और पूछा कि वह बैल को कहाँ लिये जा रहा है। सबसे छोटे भाई ने उसे सारा किस्सा सुनाया और यह कहा—

"हम बैल को एक अक्लमंद आदमी के पास लिए जा रहे हैं जो हमारा मामला निपटा देगा। हम उसकी राय के मुताबिक काम करेंगे।"

घुड़सवार को अलविदा कहते हुए उसने कहा—

“तुम जल्दी ही मेरे मँझले भाई से जा मिलोगे। वह बैल की बगल में चल रहा है। उसे सलाम पहुँचाना और कहना कि वह बैल को ज़रा तेज़ी से बढ़ाता जाए। हमें रात होने से पहले अक्लमंद आदमी के गाँव में पहुँचना है।”

“अच्छी बात है,” घुड़सवार ने कहा। उसने अपने घोड़े को दुलकी पर डाला और आगे निकल गया।

घुड़सवार दोपहर के वक्त मझले भाई के बराबर जा पहुँचा जो चितकबरे बैल की बगल में चल रहा था।

घुड़सवार ने उससे सलाम-दुआ की और बोला—

“तुम्हारे छोटे भाई ने तुम्हें सलाम भेजा है और कहा है कि तुम बैल को तेज़ी से हाँकते जाओ ताकि रात होने से पहले ही मंज़िल पर पहुँच जाएँ।”

मँझले भाई ने घुड़सवार का शुक्रिया अदा किया और बोला—

“जब तुम्हारा घोड़ा बैल के सिर के करीब जा पहुँचे तो तुम मेरे बड़े भाई को मेरा सलाम देना और कहना कि वह बैल को जल्दी-जल्दी हाँकता चले। हम जल्दी से जल्दी अक्लमंद आदमी के गाँव में पहुँचना चाहते हैं।”

घुड़सवार घोड़ा दौड़ाता रहा और शाम होने पर ही वह बैल के सिर के पास पहुँचा। उसने सबसे बड़े भाई को छोटे भाइयों का सलाम दिया और बताया कि उन दोनों ने क्या प्रार्थना की है।

“मैं तो अब कुछ भी नहीं कर सकता”, सबसे बड़े भाई ने कहा। “अंधेरा तो हो भी गया है। हमें बैल को हाँकना बंद करके यहीं कहीं रात बितानी होगी।”

और उसने अपनी चाल धीमी कर दी।

मगर घुड़सवार नहीं रुका और घोड़ा बढ़ाता चला गया।

भाइयों ने स्तेपी में रात बिताई। अगली सुबह वे फिर से अपने बैल को हाँकते हुए आगे चल दिए। तब, अचानक एक बहुत ही भयानक बात हुई। एक अतिकाय उकाब आकाश से नीचे झपटा, उसने बैल को अपने पंजों में पकड़ा, उसे ऊपर उठाया और ऊँचे आकाश में उड़ा ले गया।

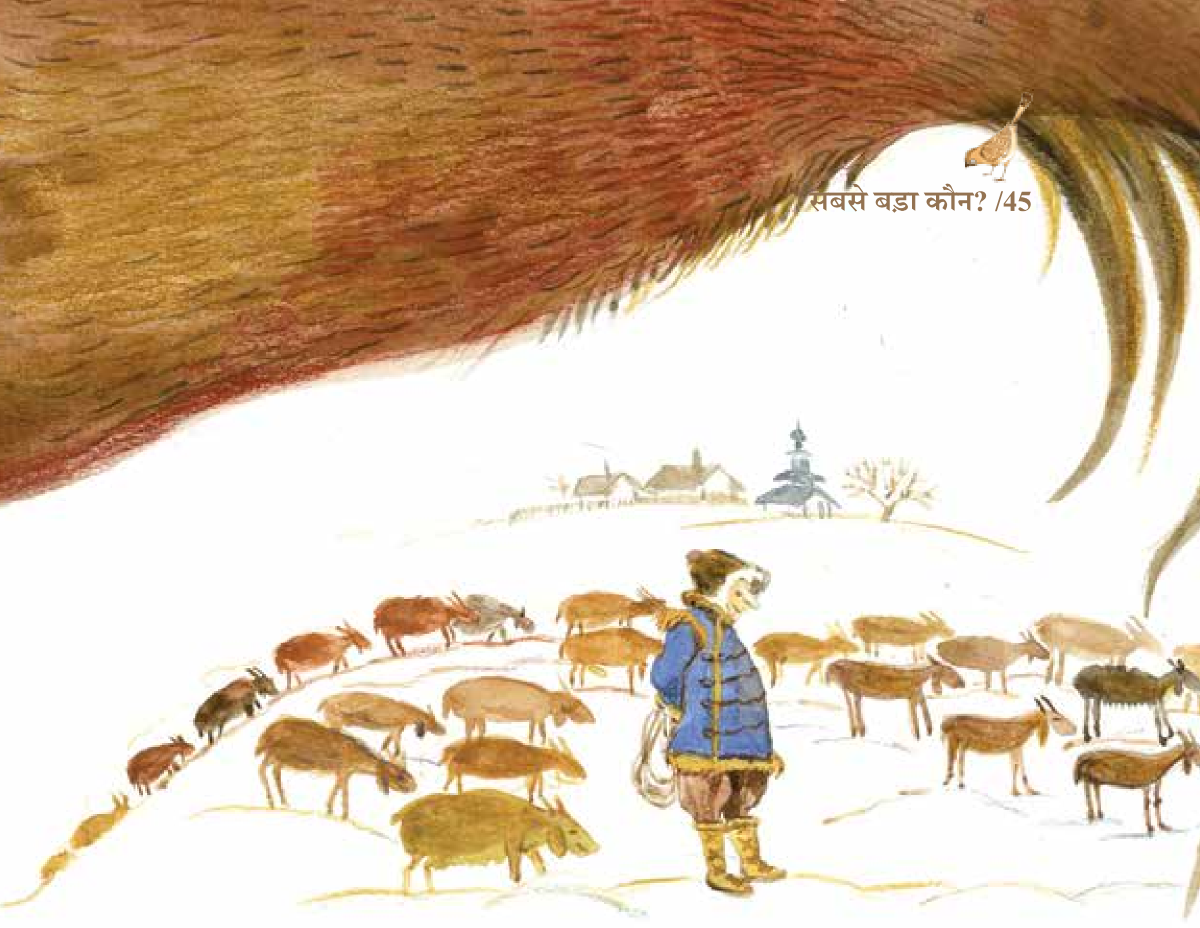

भाई कुछ देर तक रोते-सिसकते और दुखी होते रहे और फिर खाली हाथ घर लौट गये।

इसी बीच उकाब बैल को पंजों में दबाये उड़ता रहा। अचानक उसे नीचे चरागाह में बकरियों का एक रेवड़ दिखाई दिया। उनमें से एक बकरे के बड़े ही लंबे सींग थे। उकाब नीचे की ओर झपटा, बकरे के सींगों पर बैठ गया और बैल को नोच-नोचकर खाने तथा उसकी हड्डियाँ इधर-उधर बिखराने लगा।

अचानक मूसलाधार बारिश होने लगी और गड़रिये तथा उसकी सभी बकरियों ने इसी लंबे सींगोंवाले बकरे की दाढ़ी के नीचे पनाह ले ली।

सहसा गड़रिये की बाईं आँख में बहुत ज़ोर से दर्द होने लगा।

"मेरी आँख में ज़रूर कोई किरकिरी पड़ गई होगी", उसने सोचा।

शाम होने पर गड़रिया अपने रेवड़ को गाँव की ओर हाँक ले चला। उसकी आँख का दर्द बढ़ गया था और वह गिड़गिड़ाते हुए लोगों को पुकारने लगा—

"गाँववालो, हकीमों को बुला लाओ! उनसे कहो कि वे चालीस नावों में बैठकर मेरी आँख में तैरें और किरकिरी निकालें। वह मुझे ज़रा भी चैन नहीं लेने देती!"

सो गाँववाले गये और चालीस हकीमों को ढूँढ़ कर लाए तथा उनसे बोले—

"आप हमारे गड़रिये की आँख में तैरें। किरकिरी खोजकर उसका दर्द दूर करें। मगर ध्यान रखिये कि उसकी आँख को किसी तरह की हानि न पहुँचने पाए।"

चालीस हकीम चालीस नावों में बैठकर गड़रिये की आँख में तैरने लगे। उन्होंने किरकिरी खोज ली जो वास्तव में किरकिरी नहीं, बल्कि बैल के कंधे की हड्डी थी। वह उस समय गड़रिये की आँख में जा गिरी थी जब उसने बारिश से बचने के लिए बकरे की दाढ़ी के नीचे पनाह ली थी।

इसके बाद गड़रिये की आँख में दर्द बंद हो गया, सभी हकीम अपने घर चले गये और बैल के कंधे की हड्डी गाँव से बहुत दूर ले जाकर फेंक दी गई।

कुछ देर बाद उसी जगह के करीब से कुछ खानाबदोश गुज़रे जहाँ बैल के कंधे की हड्डी पड़ी थी। रात होनेवाली थी। बुज़ुर्गों ने आपस में सलाह की और वहीं ठहरने तथा आग जलाने का फ़ैसला किया।

"रात बिताने के लिए यह सफ़ेद ज़मीन ही सबसे अच्छी और सुरक्षित जगह लगती है", उन्होंने कहा।

मगर जब सभी खानाबदोशों ने डेरे जमा लिए और सोने की तैयारी करने लगे तो अचानक ज़मीन हिलने और काँपने लगी। खानाबदोश डर गये। उन्होंने झटपट अपनी चीज़ें ठेलों पर लादीं, घोड़े जोते और फ़ौरन वहाँ से रवाना हो गये।

सुबह होने पर ही उन्हें डर से निज़ात मिली और उन्होंने अपने खेमे गाड़े। इसके बाद बुज़ुर्गों ने भूचालवाली जगह पर चालीस घुड़सवार यह जानने के लिए भेजे कि वहाँ क्या किस्सा हुआ था।

चालीस घुड़सवार वहाँ पहुँचे। उन्होंने देखा कि जिस को वे रात के वक्त सफ़ेद ज़मीन समझ बैठे थे, वह वास्तव में एक अतिकाय हड्डी–बैल के कंधे की हड्डी थी जिसे इस समय भी एक लोमड़ी कुतर रही थी।

"तो इसलिए ज़मीन हिल रही थी!" घुड़सवार चिल्लाये। उन्होंने निशाना साधा, तीर छोड़े और लोमड़ी को मार डाला।

इसके बाद वे चालीस घुड़सवार इस लोमड़ी की खाल उतारने लगे। मगर वे उसकी एक तरफ़ की खाल ही उतार पाये और दूसरी तरफ़ वैसे ही छोड़ देनी पड़ी। कारण कि अपना पूरा ज़ोर लगाने पर भी वे लोमड़ी को उलट नहीं पाये।

घुड़सवार अपने खेमे में लौटे और उन्होंने बुज़ुर्गों से सारी बात कही। बुज़ुर्ग सोचने लगे कि क्या किया जाए।

इसी समय एक जवान औरत इनके पास आई और बोली—

"आपके घुड़सवार जो लोमड़ी की खाल का टुकड़ा लाए हैं, कृपया वह मुझे दे दीजिए। मैं उससे अपने नवजात शिशु की टोपी बनाऊँगी।"

"अच्छी बात है", बुज़ुर्गों ने कहा, "ले लो।"

इस जवान औरत ने अपने बच्चे का सिर मापा और उसके सिर के लिए लोमड़ी की खाल में से टोपी काटने लगी। मगर उसने पाया कि लोमड़ी की खाल बच्चे की टोपी का सिर्फ़ आधा हिस्सा बनाने के लिए काफ़ी है। इसलिए वह फिर से बुज़ुर्गों के पास गई और उसने उनसे बाकी आधा हिस्सा देने के लिए कहा।

तब चालीस घुड़सवारों ने यह माना कि वे लोमड़ी को उलटकर उसकी दूसरी तरफ़ की खाल नहीं उतार पाये थे।

"अगर तुम लोमड़ी की आधी खाल से अपने बच्चे की टोपी नहीं बना सकतीं तो बेहतर यही है कि खुद जाकर लोमड़ी के दूसरे हिस्से की खाल उतार लो", वे बोले।

औरत अपने बच्चे को लेकर वहाँ गई जहाँ घुड़सवार लोमड़ी को छोड़ आए थे। उसने बड़ी आसानी से लोमड़ी को उलटा, उसकी दूसरी तरफ़ की खाल उतारी और खाल के दोनों हिस्सों से अपने बच्चे की टोपी बना दी।

अच्छा, अब हम आप से यह पूछना चाहते हैं कि आपके खयाल में कौन सबसे बड़ा था—

बैल? यह मत भूलिएगा कि घुड़सवार को उसकी पूँछ से उसके सिर तक सफ़र करने में पूरा दिन लग गया था।

या फिर उकाब?

यह याद रहे कि वह बैल को आकाश में उड़ा ले गया था।

या फिर बकरा?

यह मत भूलिएगा कि उकाब ने उसी के सींगों पर बैठकर बैल को खाया था।

या फिर गड़रिया?

याद रखिए कि चालीस हकीम चालीस नावों पर सवार हो उसकी आँख में तैरे थे।

या लोमड़ी?

मत भूलिएगा कि जब वह बैल के कंधे की हड्डी को कुतर रही थी तो ज़मीन काँपने लगी थी।

या बच्चा?

याद रखिए कि उसकी टोपी बनाने के लिए लोमड़ी की पूरी खाल की ज़रूरत पड़ी थी।

या फिर वह औरत सबसे बड़ी थी जिसका बच्चा इतना बड़ा था?

अब आप सोचें, खूब सोचें। हो सकता है कि आप हमें इसका जवाब दे सकें।

सबसे भली चुप

एक था चाचा और एक था भतीजा। एक बार दोनों यजमानी को निकले। रामपुर जैसे गाँव में पहुँचकर, यजमान के यहाँ ठहरे। यजमान ने आदर-सम्मान दिया और पुरोहित महाराज को लड्डू बनाने को कहा।

चाचा-भतीजा ने बाटियाँ सेंककर चूरमा बनाया और उसके लड्डू बनाये, जो हुए पाँच। अब चाचा-भतीजा दोनों सोच में पड़ गये कि इसको दो के बीच बाँटें कैसे? लड्डू को तोड़कर हिस्सा करना किसी को पसंद नहीं आया। आखिर चाचा-भतीजा ने यह तय किया कि हम चुप बैठेंगे– जो पहले बोले सो दो खाए, और जो न बोले वह तीन खाए।

चाचा-भतीजा दोनों बिना कुछ बोले चुपचाप लंबी तान के सो गये। यजमान ने आकर देखा कि कोई कुछ बोलता ही नहीं। बहुत पुकारा, पर कोई जवाब दे तब न? सब कहने लगे– 'क्या मालूम साँप-वाँप ने काट लिया हो और मर गये हों?'

यजमान ने कहा, 'तो चलो, ब्राह्मण के बेटे हैं, सो ठिकाने तो लगाना होगा!' इस प्रकार बातें करने लगे और चाचा-भतीजा दोनों पड़े-पड़े यह सुनते रहे। मन ही मन कहने लगे, यह तो गज़ब हो गया! परंतु बोले कौन? बोलेंगे तो दो ही लड्डू मिलेंगे।

गाँव के लोग जमा हुए और अर्थी तैयार की गई। चाचा-भतीजा को कसकर बाँधा, परंतु दोनों में से एक भी नहीं बोला, जैसे वे सचमुच में दो लाशें हैं! 'राम बोलो...' कहते हुए उन्हें श्मशान ले गए। श्मशान में चिता तैयार करके दोनों को उस पर रख दिया। सारे लोग तो नदी में नहाने चले गए, केवल पाँच लोग वहाँ खड़े रहे।

यजमान बेचारे ने घास सुलगायी और 'ओम्...ओम्...' करते हुए चिता में आग रखी। चाचा मन में सोचता है—मरें तो कोई बात नहीं, मगर लड्डू दो नहीं खाने हैं। खाएँ तो तीन खाएँ, नहीं तो कुछ नहीं।

भतीजे ने सोचा तीन लड्डू के चक्कर में मर गए तो ज़िंदगी से ही हाथ धो बैठेंगे। इसलिए आखिर भतीजा बोला, 'अरे भागो यहाँ से! तीन तुम्हारे और दो ही मेरे!'

चाचा-भतीजा दोनों चिता से उठ बैठे। वहाँ खड़े पाँचों बोले, 'भागो जल्दी! ये तो भूत हो गये।' पाँचों वहाँ से भाग निकले।

चाचा-भतीजा दौड़ते हुए यजमान के बाड़े में जाकर लड्डू खाने बैठ गये–तीन चाचा ने खाये। दो भतीजे ने।

– गिजुभाई बधेका

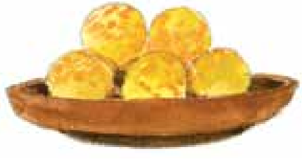

मरता क्या न करता

केरल के एक गाँव में एक मंदिर था। मंदिर के पुजारी का नाम था विष्णु पोट्टि। वह एक छोटे-से घर में अपनी पत्नी के साथ रहता था। विष्णु पोट्टि था तो बहुत गरीब लेकिन उसको दानी कहलाने का शौक था। हर रोज़ वह दो-एक अजनबियों को अपने घर खाना खिलाने ले आता, चाहे घर में खाने को पर्याप्त हो या नहीं। दूसरों को खिलाकर खाने को वह अपना धर्म समझता था।

उसकी पत्नी लक्ष्मी को उसकी यह आदत पसंद नहीं थी। पर वह अपने पति की मरज़ी के खिलाफ़ कभी कुछ न कहती।

वह किसी न किसी तरह घर का काम चलाया करती थी। पड़ोसियों से कभी चावल उधार लाती तो कभी सब्ज़ी। एक दिन उसने सोचा कि इस तरह कब तक काम चलेगा? पड़ोसी लोग भी उससे नाराज़ होते। उनको विश्वास नहीं होता था कि वह सचमुच इतनी गरीब है, क्योंकि वे रोज़ मेहमानों को आते और खाते देखते थे। बेचारी की मदद करनेवाला कोई नहीं था। कितनी ही बार तो वह कई-कई दिनों तक भूखी रह जाती। उसके लिए जीना दूभर हो गया था।

जब उससे और नहीं सहा गया तो उसने पति से साफ़-साफ़ बात करने का फ़ैसला किया।

एक दिन रात में विष्णु पोट्टि भोजन करने के बाद सोने जा रहा था कि लक्ष्मी उसके पास गई। उसने कहा, "सुनो जी, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहती हूँ।"

विष्णु पोट्टि बड़ा हैरान हुआ। लक्ष्मी ने इस तरह से पहले कभी बात नहीं की थी।

दु:ख के मारे लक्ष्मी से बोला नहीं गया। वह रोने लगी। उसके पति ने झुँझलाकर कहा, "बात क्या है, कहती क्यों नहीं?"

आँचल के छोर से आँखें पोंछते हुए लक्ष्मी ने कहा, "आप हर रोज़ किसी न किसी को ले आते हैं। अपने भोजन में से दूसरों को खिलाना अच्छी बात है। पर आपने कभी यह भी पूछा कि खाना पूरा भी पड़ेगा या नहीं? हम ठहरे गरीब। जो रूखा-सूखा जुटता भी है, वह हम दोनों के पेट भरने को काफ़ी नहीं होता। फिर दूसरों के लिए रोज़-रोज़ कहाँ से आएगा? मैं अपना हिस्सा उनको खिला देती हूँ और खुद भूखी रह जाती हूँ। मुझसे अब और नहीं सहा जाता। मेरे ऊपर दया करो। अब हर किसी को घर बुलाना बंद कर दो। इतनी कृपा करो।"

विष्णु पोट्टि यह सुनकर दंग रह गया। उसने सोचा, 'ऐसा कहने की हिम्मत लक्ष्मी को कैसे हुई? शायद उसे खुद नहीं मालूम कि वह कैसी मूर्खता की बात कह रही है। बाद में पछताएगी।'

उसने लक्ष्मी को बुलाकर उसकी पीठ थपथपाई और कहा, "रोओ मत। मैं तुम्हारी मूर्खता के लिए तुम्हें क्षमा करता हूँ। दूसरों के साथ मिल बाँटकर खाना अच्छी बात है। तुम जो त्याग करोगी उससे मेरा कल्याण होगा। भगवान पर भरोसा रखो और अपने पति की आज्ञा का पालन करो। यही तुम्हारा धर्म है।" यह कहकर वह सो गया और ज़रा ही देर में खर्राटे भरने लगा।

पर लक्ष्मी की आँखें झपकीं भी नहीं। वह पड़ी रोती रही। उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

पुजारी दूसरे दिन तड़के सुबह उठकर मंदिर चला गया। नित्य की भाँति दोपहर को दो अजनबियों के साथ भोजन के लिए पहुँचा। लक्ष्मी ने उनको दूर से आते देखा तो घबरा गई। उसने सोचा कि आज फिर उसके भाग्य में भूखा रहना बदा है। लेकिन अचानक उसको एक उपाय सूझा।

विष्णु पोट्टि ने मेहमानों से हाथ जोड़कर कहा, "आप बैठिए, मैं अभी मुँह-हाथ धोकर आता हूँ।"

पुरोहित के जाने के बाद लक्ष्मी धान कूटने का मूसल उठा लाई और उसको दीवार के सहारे टिका दिया। उसके बाद उसने पीतल का दीया जलाकर मूसल के आगे रख दिया। मूसल के चारों ओर दो-चार फूल भी डाल दिए और उसके सामने हाथ जोड़कर बैठ गई। ऐसी जगह बैठी जहाँ अतिथि उसको देख सकें। अतिथियों ने उसको देखा तो हैरान रह गए। मूसल की पूजा करते उन्होंने आज तक किसी को नहीं देखा था।

दोनों आकर लक्ष्मी के पास खड़े हो गए। वह ध्यानमग्न बैठी थी। उसने अपनी आँखें खोलीं और सर घुमाया तो उन दोनों को खड़ा पाया। एक ने पूछा, "आप मूसल की पूजा क्यों करती हैं?"

लक्ष्मी ने आँखों में आँसू भरकर कहा, "मैं अपने पति की बुराई कैसे कर सकती हूँ? फिर भी आप को बताना ही पड़ेगा क्योंकि इसका संबंध भी आपसे ही है।"

अब तो दोनों उसका भेद जानने के लिए लक्ष्मी के पीछे पड़ गए।

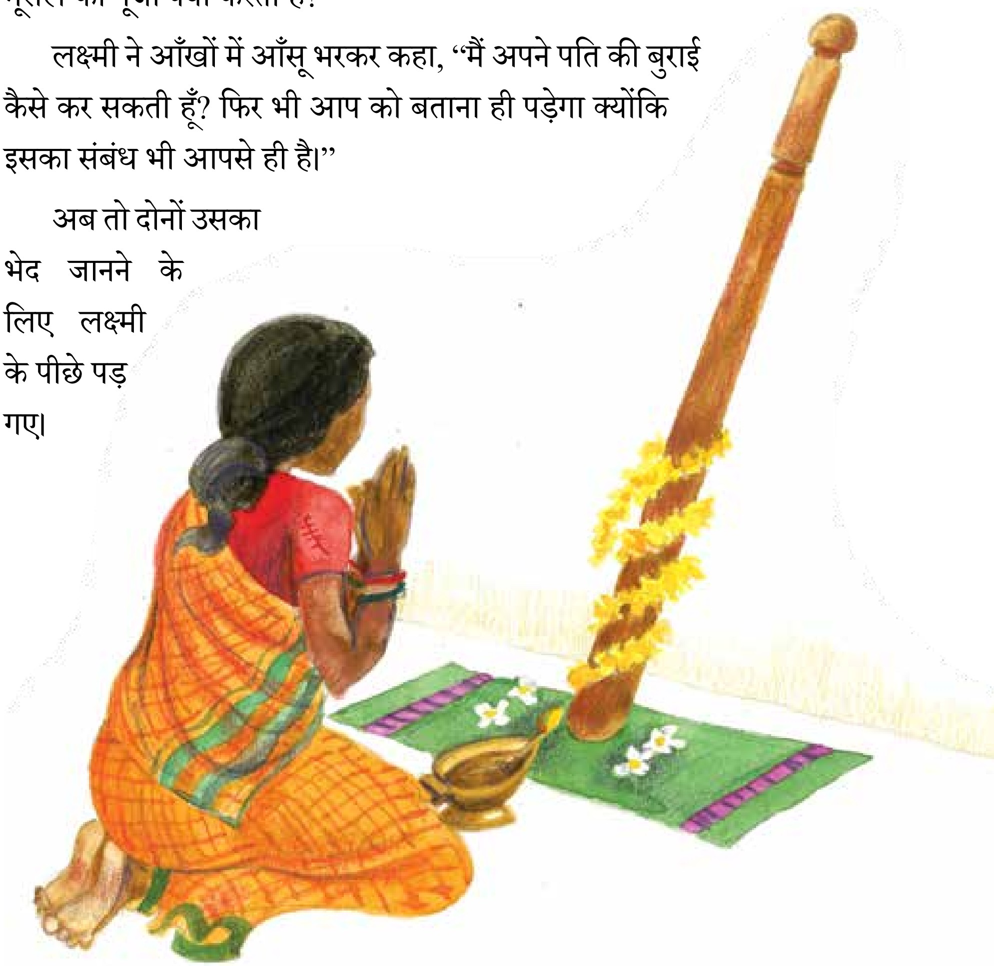

लक्ष्मी ने कहा, “पहले आप वायदा कीजिए कि मेरे पति को कुछ नहीं बताएँगे।”

उन दोनों ने वायदा किया।

लक्ष्मी ने कहा, “मेरे पति दानी आदमी हैं। वह मेहमानों को घर बुलाकर खाना खिलाते हैं और खिलाने के बाद उन्हें इसी मूसल से खूब पीटते हैं। कहते हैं यही उनका धर्म है। मैं खाना तो बनाती हूँ। लेकिन मारने-पीटने से मेरा कोई मतलब नहीं। मैं मूसल की पूजा इसलिए कर रही हूँ कि पाप मुझको न लगे।”

अब तो अतिथि बहुत चकराए। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। उन्होंने इशारों ही इशारों में कहा कि यहाँ से चुपचाप खिसक जाने में ही भला है। वे दोनों पीछे के दरवाज़े से निकल भागे।

उसी समय विष्णु पोट्टि घर में घुसा। उसने लक्ष्मी से पूछा कि मेहमान कहाँ चले गए?

लक्ष्मी ने बड़े दु:ख के साथ कहा, “मेरी मूर्खता को क्षमा कीजिए। वे मुझसे यह मूसल माँग रहे थे। मैंने कहा, मेरे घर में एक ही मूसल है, मैं नहीं दूँगी। बस वे गुस्सा होकर चले गए।”

पोट्टि गुस्से से चिल्लाया, “तुमने मेरी पत्नी होकर मेरे मेहमानों का अपमान कर दिया। लाओ मूसल मैं उन्हें दे आता हूँ।”

पत्नी के हाथ से मूसल छीनकर वह अतिथियों के पीछे दौड़ा।

दोनों काफ़ी आगे निकल गए थे। उन्होंने पोट्टि को गुस्से में मूसल उठाए पीछे आते देखा तो बोले, “देखो, वह आ रहा है हमें मारने।”

दोनों अपनी जान बचाकर भागे। पोट्टि उनको पकड़ नहीं सका तो लौट गया।

गाँववालों ने पुजारी को मेहमानों के पीछे मूसल उठाए भागते देखा। उन्होंने चारों ओर यह बात फैला दी कि विष्णु पोट्टि अपने मेहमानों को घर ले जाकर उन्हें मूसल से मारता है। उसके बाद कोई भी खाने के लिए उसके घर जाने को तैयार न होता।

विष्णु पोट्टि को पता नहीं चला कि यह लक्ष्मी की चाल थी। लक्ष्मी को भी फिर कभी भूखा नहीं रहना पड़ा।

रोटी और मुर्गी

धनुषा ज़िले के एक गाँव में एक भूमिहीन किसान रहता था। वह बहुत गरीब था। कभी-कभी उसे भूखे ही सो जाना पड़ता था। इतना होने पर भी उसकी पत्नी उसे हमेशा ढाढ़स बँधाती, "कभी तो अच्छे दिन लौटेंगे। अभी तो हमारे शरीर में शक्ति है।" पत्नी की इन बातों से किसान का हौसला बना रहता।

उनके पास एक गाय थी। गरीबी के कारण वे गाय को अच्छी खुराक भी नहीं दे पाते थे, जिससे गाय अधिक दूध नहीं देती थी। जो भी दूध मिलता, उसे कभी बेचते, तो कभी पीकर अपनी भूख मिटाते।

खेती का मौसम आने पर दोनों काम पर निकल पड़ते। इस मौसम के निकल जाने पर दोनों जंगल को जाते–सूखी लकड़ियाँ तथा टहनियाँ बीनकर लाते, उन्हें बेचते और उनसे मिले पैसों से अपना गुज़ारा करते। कभी चावल-दाल, तो कभी उबले आलू खाकर सो जाते।

एक बार गाय ने बछिया को जन्म दिया। किसान की पत्नी ने सोचा, 'दूधारू गाय को खरीदनेवाले लोग मिल जाते हैं। क्यों न इसे बेचकर इससे मिले रुपयों से कोई धंधा शुरू किया जाए!' उसने अपने मन की बात पति को बताई। किसान गाय बेचने को राज़ी हो गया।

सुबह-सुबह एक पोटली में थोड़ा चिड़वा बाँधकर वह निकल पड़ा। घर से निकलते समय किसान की पत्नी ने गाय के कान में फ़ुसफ़ुसाते हुए कहा, "हमें माफ़ कर देना, गैया माई। ईश्वर ने हमें गरीब नहीं बनाया होता तो हम तुम्हें कभी नहीं बेचते।" इतना कहते-कहते वह रोने लगी। उसके गाल पर गिरे आँसुओं को गाय

चाटने लगी। किसान से पत्नी की हालत देखी नहीं गई। वह जल्दी से गाय को लेकर निकल पड़ा।

चलते-चलते धूप तेज़ हो गई। खाली पेट होने और तेज़ धूप के कारण वह थकान महसूस करने लगा। एक बहती हुई नदी को देखकर उसने सोचा, "चलो नाश्ता कर लेते हैं। पीने के लिए पानी भी है।" और वह साथ लाया चिड़वा चबाने लगा। तभी उसका ध्यान घोड़े की टाप से भंग हुआ। एक घुड़सवार सामने खड़ा था। उसने पूछा, "गाय बेचने जा रहे हो क्या?"

किसान ने सिर हिलाया। घुड़सवार को गाय अच्छी लगी। साथ में बछिया भी थी। उसने कहा, "भैया, मेरे पास रुपये तो नहीं हैं। हाँ, अगर मेरे घोड़े के साथ बदलना चाहो तो मैं तैयार हूँ। तुम घोड़ा ले लो, मुझे गाय दे दो।"

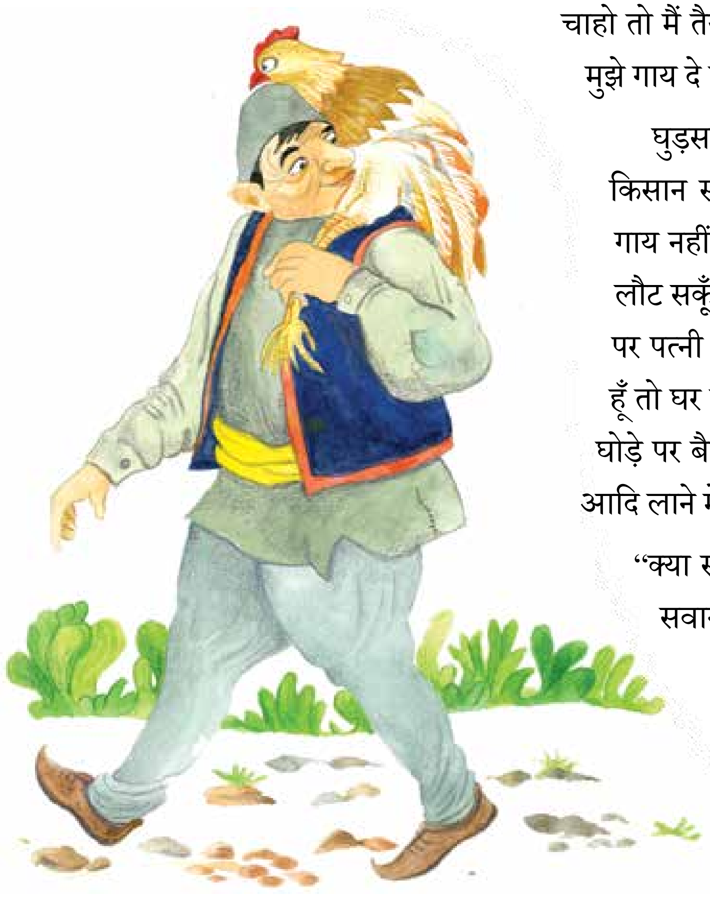

घुड़सवार की बातों को सुनकर किसान सोचने लगा, "यदि आज गाय नहीं बिक पाई तो मैं घर नहीं लौट सकूँगा। और घर न लौट पाने पर पत्नी चिंता करेगी। घोड़ा लेता हूँ तो घर लौटने में देरी नहीं होगी। घोड़े पर बैठकर जंगल से लकड़ियाँ आदि लाने में भी आसानी होगी।"

"क्या सोच रहे हो, भाई?" घुड़-सवार ने प्रश्न किया।

किसान ने सहमति जताई। सौदा तय हुआ, फिर वह घोड़े पर बैठकर घर की ओर चल पड़ा।

वह कुछ ही दूर पहुँचा होगा कि रास्ते में उसने भेड़ के झुंड को आते देखा। सोचने लगा, 'घोड़े से अच्छी तो भेड़ होगी। दूध भी मिलेगा और ऊन भी। उसे खिलाने की समस्या भी नहीं होगी।'

उसने अपने मन की बात गड़रिए से बताई। गड़रिया उसकी बात सुनकर खुशी से उछल पड़ा, "भेड़ के बदले एक घोड़ा?" उसने फौरन एक भेड़ किसान को दी और घोड़ा लेकर उस पर बैठ गया।

अब किसान भेड़ को लेकर पैदल चलने लगा। उसे बार-बार पत्नी की याद आ रही थी। रास्ते में उसने इस बार दो मुर्गियों के साथ एक आदमी को आते हुए देखा। किसान ने उस आदमी से पूछा, "कहाँ जा रहे हो भाई, इन मुर्गियों को लेकर?"

उसने कहा, "बेचने।" किसान सोचने लगा, "मुर्गी तो भेड़ से भी अच्छी रहेगी। हम पति-पत्नी को खाने को अंडे तो मिलेंगे। हमारी सब्ज़ी की समस्या भी दूर हो जाएगी। शरीर को ताकत भी मिलेगी।" उसने पूछा, "क्यों भाई, मेरी इस भेड़ से तुम मुर्गी बदलना पसंद करोगे?"

मुर्गीवाला धूर्त था। उसने कहा, "एक शर्त पर। अगर एक मुर्गी लोगे तब।"

किसान भेड़ के बदले एक मुर्गी लेने के लिए तैयार हो गया। दोनों में सौदा तय हुआ। किसान मुर्गी लेकर घर की ओर बढ़ने लगा।

दिन ढलता जा रहा था। किसान को घर पहुँचने की जल्दी हो रही थी। भूख के मारे उसके पेट में चूहे दौड़ रहे थे। वह जल्दी-जल्दी चलने की कोशिश करने लगा। तभी रास्ते में एक ढाबे पर रोटियाँ बन रही थीं। साथ ही दाल के तड़के की खुशबू से किसान के मुँह में पानी आने लगा। भूख बढ़ती गई और उसका पैर ढाबे की ओर बढ़ने लगे। एकाएक उसने सामने ढाबे के मालिक रामू को पाया। कहने लगा, "मुझे बड़ी भूख लगी है। मैं रोटी खाना चाहता हूँ, लेकिन मेरे पास पैसे नहीं हैं। आप यह मुर्गी रख लें और मुझे भरपेट खाने को रोटी-सब्ज़ी दे दें।"

रामू सोचने लगा, "यह आदमी या तो पागल है या चोर।" किसान से पूछा, "क्या यह चोरी की मुर्गी है?"

किसान ने कहा, "नहीं तो। इसे मैंने उस आदमी से बदला है, जो भेड़ लेकर जा रहा था। मेरी बातों पर भरोसा न हो तो, उसे बुलाकर पूछ लीजिए।"

ढाबे के मालिक को विश्वास हो गया कि मुर्गी चोरी की नहीं है। फिर उसने पूछा, "तुमने भेड़ के साथ मुर्गी बदलने का सस्ता सौदा क्यों किया?"

किसान ने उसे पूरी कथा बताई। यह सुनकर रामू बोला, "रोटी तो तुझे मिलेगी, लेकिन मुझे तुझ पर तरस भी आ रहा है। आज तेरी खैर नहीं है। तेरी पत्नी तेरी बातों को सुनकर तुझे घर में घुसने नहीं देगी।"

किसान कहने लगा, "आप मेरी पत्नी को नहीं जानते। मेरी पत्नी अनपढ़ भले ही हो, लेकिन है बहुत समझदार। मेरे इस सौदे पर वह भी नाराज़ नहीं होगी।"

रामू ने कहा, "शर्त लगाओगे?" किसान ने पूछा, "शर्त क्या होगी?" रामू बोला, "तुम्हीं बताओ।"

किसान गरीब था। उसके पास देने के लिए तो कुछ था नहीं। उसने कहा, "अगर मैं शर्त हार गया तो तुरंत ही खाली हाथ वापस लौट आऊँगा। ज़िंदगी भर आपकी नौकरी करूँगा। लेकिन अगर आप शर्त हार गए तो?"

उसकी बात सुनकर रामू बोला, "अगर मैं शर्त हार गया तो तुम्हें गाय, घोड़ा, भेड़ और मुर्गी की पूरी कीमत दूँगा।"

किसान भूख के मारे बेचैन हो रहा था। उसने कहा, "मुझे शर्त मंज़ूर है, सेठ जी। लो, इस मुर्गी को पकड़ो और मुझे खाने के लिए रोटी-दाल दो।"

किसान जब रोटी खाने लगा तो रामू ने कहा, "भाई, मैं भी तेरे साथ चलूँगा। क्योंकि मुझे तेरी पत्नी के धैर्य की परीक्षा भी लेनी है।"

किसान ढाबे के मालिक को लेकर चलने को तैयार हो गया। दोनों के घर पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो चुका था। किसान पत्नी को आवाज़ देते हुए घर के अंदर घुस गया। रामू बाहर खड़ा होकर उनकी बातें सुनने लगा। किसान को कमरे में आते देख उसकी पत्नी ने कहा, "चलो, अच्छा हुआ। रात होने से पहले ही वापस आ गए। गाय कितने में बिकी?"

किसान ने कहा, "गाय तो बेच दी, लेकिन पैसे हाथ नहीं आए। उसके बदले घोड़ा लेना पड़ा।"

"चलो, कोई बात नहीं। अब तुम्हें लकड़ी लाने जंगल तक पैदल नहीं चलना पड़ेगा। लकड़ी भी घोड़े पर ढो सकते हो?" पत्नी ने कहा।

"यही सोचकर तो यह सौदा किया था, लेकिन रास्ते में एक घटना हो गई, जिसके कारण घोड़ा हाथ से निकल गया।" किसान ने कहा।

"कोई बात नहीं, तुम्हें चोट तो नहीं आई?"

"नहीं, इस प्रकार की घटना नहीं हुई। रास्ते में लौटते हुए घोड़े के बदले यह सोचकर एक भेड़ ली कि गाय के न होने पर भी हमें दूध की कमी नहीं होगी।" किसान ने कहा।

"हाँ, यह तो तुमने अच्छा सोचा। चलो, अब दूध की परेशानी तो नहीं रहेगी।" पत्नी ने कहा।

"लेकिन भाग्य को यह भी मंज़ूर नहीं था। रास्ते में मैंने उसके बदले यह सोचकर एक मुर्गी ले ली कि उससे रोज़ अंडे मिलेंगे। अंडे से चूज़े निकलेंगे। इन्हें बेचकर हम धन भी कमा सकेंगे और कभी-कभी अंडे भी खाने को मिलेंगे।" किसान ने कहा।

"यह भी बहुत सोचा। मुझे भी बहुत दिनों से मुर्गी पालने की इच्छा हो रही थी। कहाँ है मुर्गी?" पत्नी ने पूछा।

"लेकिन भाग्यवान, मुर्गी भी हाथ से निकल गई।" किसान ने कहा।

"कैसे?" हँसते हुए पत्नी ने पूछा।

"हुआ यह कि सुबह से मैं भूखा था। रास्ते में एक भोजनालय मिला। रोटियों की खुशबू से मेरे पेट में चूहे दौड़ने लगे। मैं अपने को रोक नहीं सका। मुर्गी के बदले मैंने ढाबे में भरपेट रोटियाँ खाईं।"

"मेरे लिए यह कितनी खुशी की बात है कि तुमने कई दिन बाद भरपेट रोटियाँ खाईं। तुम स्वस्थ और कुशल रहोगे तो हम लोग कमाते रहेंगे और कभी मुर्गी भी खरीदकर पाल लेंगे।" कहते हुए किसान की पत्नी बाल्टी लेकर उठी और बोलने लगी, "चलो मुँह-हाथ धो लो।" किसान उठा। उसने रामू को अंदर आने के लिए कहा। रामू किसान की पत्नी की समझदारी और सहनशील स्वभाव की प्रशंसा करते हुए उसे शर्त जीतने पर बधाई देने लगा। फिर बोला, "बहन जी, एक बात बताओ। आपके पति ने इतनी बड़ी बेवकूफ़ी की, फिर भी आपको गुस्सा नहीं आया। आपकी सहनशीलता की तारीफ़ करनी ही पड़ेगी।"

किसान की पत्नी ने कहा, "भाई, ईश्वर ने हमें गरीब और संतानहीन बनाया। हमारे बीच जो प्रेम है, उसे हम अपनी अमूल्य संपत्ति समझते हैं और इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देते हैं। अब हम क्रोध दिखाकर ईश्वर के इस अमूल्य उपहार को

गँवाना नहीं चाहते हैं, न ही इनके जीवन को नर्क बनने दूँगी। मेरे लिए तो इनका सुख ही सब कुछ है। इसलिए मैं क्रोध नहीं करती।"

किसान की पत्नी की बातों से ढाबे का मालिक अत्यंत प्रभावित हुआ। वह शर्त हार चुका था। अत: वह उन्हें अपने ढाबे में ले गया और पेट-भर भोजन खाने को दिया। इसके अलावा शर्त के अनुसार उसने उसे पाँच हज़ार रुपये दिए। साथ ही उन्हें नौकरी पर भी रख लिया।

इस प्रकार किसान का दिन सुखमय हो चला।

रात को जब वे सोए थे, किसान की पत्नी ने गाय के रँभाने की आवाज़ सुनी। उठकर वह बाहर गई तो देखती है–गाय दुम हिलाते हुए आँगन में खड़ी है।

लोमड़ी और ढेला

किसी समय लोमड़ी और मिट्टी के ढेले में मित्रता हुई। एक दिन दोनों नहाने के लिए तालाब में गये। तालाब पहुँचने पर लोमड़ी ने ढेले से कहा, "जाओ मित्र, पहले तुम स्नान कर लो।"

यह सुनकर ढेले ने कहा, "नहीं मित्र! पहले तुम स्नान करो।"

इस तरह 'पहले आप', 'पहले आप' के बाद अंततः ढेला लुढ़कता हुआ पानी के भीतर पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही वह घुल गया। लोमड़ी को पानी में मछली दिखी, मछली से लोमड़ी ने कहा, मेरा ढेला दे दो, नहीं तो मैं तुम्हें पकड़ लूँगी। मछली ढेला कहाँ से लाती। लोमड़ी ने मछली को पकड़ लिया और वहाँ से चल पड़ी। रास्ते में एक व्यक्ति हल बना रहा था। लोमड़ी वहाँ पहुँची और उसी व्यक्ति के पास उस मछली को छोड़कर कहीं चली गई। वह व्यक्ति अपने काम में मगन होने के कारण उस मछली की ओर ध्यान नहीं दे पाया। थोड़ी देर बाद लोमड़ी वापस हुई तो देखा कि मछली वहाँ पर नहीं थी। उसने उस व्यक्ति से पूछा, "क्यों भाई, मैंने यहाँ एक मछली रखी थी। आपने देखी क्या?"

"नहीं तो।" उस व्यक्ति ने कहा।

लोमड़ी को उस व्यक्ति की बात पर यकीन नहीं आया। वह उसे ही दोष देने लगी। कहा, "यदि तुम मुझे मेरी मछली वापस नहीं करते तो मत करो, किंतु उसके बदले लकड़ी दो मुझे।"

यह सुनकर उस व्यक्ति ने उसे लकड़ी के कुछ टुकड़े दिए। उन्हें लेकर लोमड़ी वहाँ से चली गई। गाँव के भीतर गई और एक चरवाहन बुढ़िया के घर जा पहुँची।

वहाँ बकरियों के ठौर में उसने लकड़ी का गट्ठा रख दिया और स्वयं कहीं चली गई। इतने में बुढ़िया घर से निकली लकड़ी खोजने के लिए। देखा, बकरियों के ठौर में लकड़ी का एक गट्ठा रखा हुआ है। वह खुश होकर उस गट्ठे को घर के भीतर ले गई और जलाया और रोटी पकायी।

कुछ देर में लोमड़ी लौटी और अपनी लकड़ी का गट्ठा वहाँ न पाकर बुढ़िया से इस संबंध में पूछा। पूछने पर बुढ़िया ने कहा कि उसने वह लकड़ी जला कर रोटी बनायी है। तब लोमड़ी ने कहा, "ऐसा है तो तुम मुझे लकड़ी दो या फिर रोटी दो।"

बुढ़िया बोली, "मैंने तो सारी लकड़ियाँ जला डालीं। अब मैं कहाँ से लाकर दूँगी?" ऐसा कह उसे रोटियाँ दीं। लोमड़ी ने वे रोटियाँ बकरियों के गले के पास टाँग दी और स्वयं फिर से कहीं चली गई। इस बीच बकरियों ने सारी रोटियाँ कुतर-कुतर कर खा लीं। थोड़ी देर बाद लोमड़ी वहाँ आयी और बुढ़िया से पूछने लगी, "मैने वहाँ रोटियाँ रखी थीं। किसने खायी?"

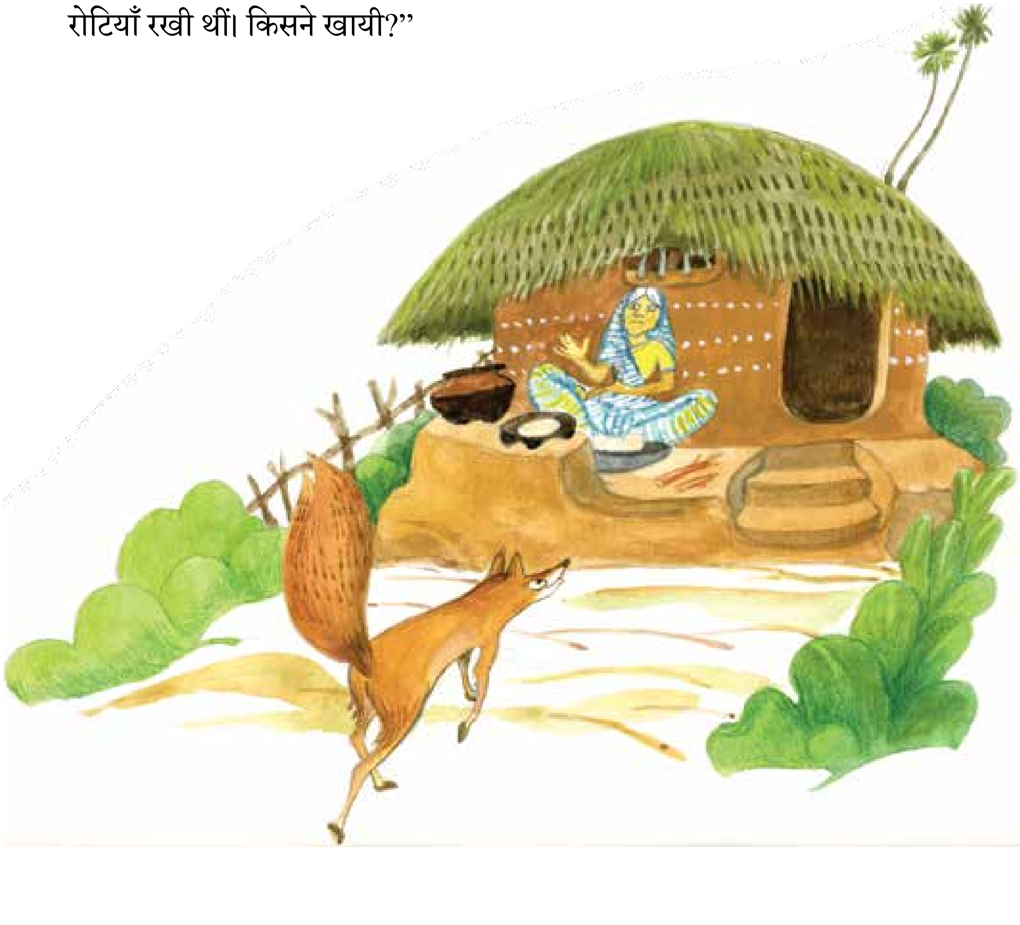

बुढ़िया ने कहा, "कौन खाता भला? बकरियों ने खा लिया होगा।"

लोमड़ी कहने लगी, "ऐसा है तो मुझे रोटी दो या फिर बकरी दो बदले में।"

ऐसा कहते बहुत परेशान करने पर बुढ़िया ने झुँझला कर लोमड़ी को एक बकरी दे दी। तब लोमड़ी उस बकरी को लेकर चली गई। देखा, एक गाँव में विवाह हो रहा था। उसने उसी विवाह-मंडप में उस बकरी को बाँध दिया और स्वयं कहीं चली गयी। वहाँ के लोगों ने देखा बकरी को और कहा कि पता नहीं किसने यह बकरी यहाँ बाँधी है! लड़की का भाई बकरी अपने साथ ले गया। थोड़ी देर बाद लोमड़ी वहाँ आई। और अपनी बकरी तलाशने लगी। देखा, बकरी वहाँ नहीं है। तब वह उस घर के लोगों से पूछने लगी, "मैंने यहाँ एक बकरी बाँधी थी, कौन ले गया उसे?"

लोगों ने कहा, "हमें नहीं पता।"

लोमड़ी बोली, "मुझे मेरी बकरी दो या फिर दुलहन दो।"

उसकी बात सुन कर लोग बहुत परेशान हो गए। अंत में हार कर दुल्हन लोमड़ी के हवाले कर दी। लोमड़ी प्रसन्न हो गई और गीत गाने लगी – मित्र से मछली पायी, मछली से लकड़ी, रोटी पायी लकड़ी से, लकड़ी से पायी बकरी। बकरी गयी तो क्या हुआ, दुलहन मैंने पायी।

टिप्पणी

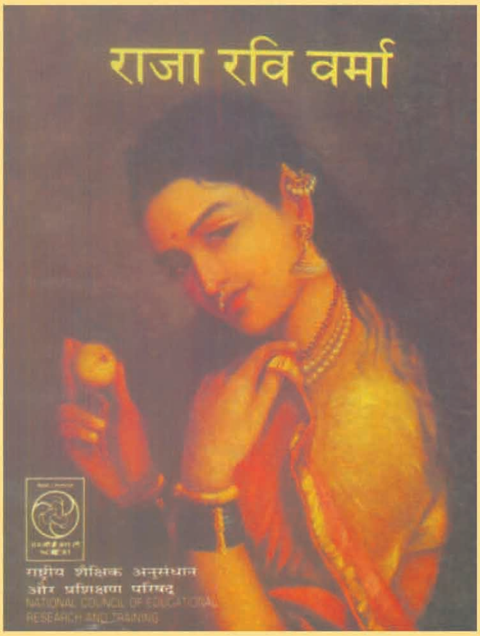

राजा रवि वर्मा

जगदीश चंद्रिकेश

इस पुस्तक में राजा रवि वर्मा का संक्षिप्त जीवन परिचय व उस समय की धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं तथा यथार्थवादी शैली में बने देवियों और नायर जाति की स्त्रियों के अनेक सुन्दर चित्र तथा उनके संक्षिप्त विवरणों को प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य: 13.50/पेपरबैक/पृष्ठ103

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

21030

विद्ययाऽमृतमश्नुते

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5007-315-5